मत्ती रचित सुसमाचार

मत्ती के अनुसार सुसमाचार (खुशी की खबर)

1 यीशु मसीह की वंशावली जो दाऊद
और अब्राहम के वंश के थे। 2 अब्राहम
के बेटे का नाम इसहाक और इसहाक के
बेटे का नाम याकूब था। याकूब से यहूदा
और उसके भाई पैदा हुए थे। 3 यहूदा और
तामार से पेरेज़ और ज़ेरह पैदा हुए थे। पेरेज़
का बेटा हेज्रोन और हेज्रोन का बेटा एराम
था। 4 एराम से अम्मीनादाब, अम्मीनादाब से
नहशोन और नहशोन से सलमोन पैदा हुआ।
5 सलमोन और राहाब से बोअज़ तथा बोअज़
और रूत से ओबेद पैदा हुआ, और ओबेद
से यिशै पैदा हुआ।
6 यिशै का बेटा राजा दाऊद था। उरिय्याह
की पत्नी और दाऊद से सुलैमान पैदा हुआ।
7 सुलैमान का बेटा रहूबियाम था, रहूबियाम
का बेटा अबिय्याह और अबिय्याह का
आसा। 8 आसा से यहोशापात, यहोशापात
से योराम और योराम से उज्जियाह पैदा
हुआ। 9 उज्जियाह से योताम, योताम से
आहाज़ और आहाज़ से हिजकिय्याह पैदा
हुआ। 10 हिजकिय्याह से मनश्शे, मनश्शे
से आमोन और आमोन से योशिय्याह पैदा
हुआ। 11 यहूदी लोग बेबीलोन ले जाए जा रहे
थे, तभी योशिय्याह से यकुन्याह और उसके
भाई पैदा हुए थे।
12 बेबीलोन ले जाए जाने के बाद
यकुन्याह ने शालतिएल और शालतिएल ने
ज़रूब्बाबेल को जन्म दिया। 13 ज़रूब्बाबेल
ने अबीऊद और अबीऊद ने एल्याकीम
और एल्याकीम ने अज़ोर को जन्म दिया।
14 अज़ोर से सदोक और सदोक से अखीम
और अखीम से एलीहूद पैदा हुआ।
15 एलीहूद से एलिआज़र, एलिआज़र से
मत्तान और मत्तान से याकूब पैदा हुआ।
16 याकूब से यूसुफ़ जो उस मरियम का पति
था, जिस से यीशु मसीह का जन्म हुआ।
17 अब्राहम से दाऊद चौदह पीढ़ी दाऊद
से बेबिलोन की गुलामी तक जाने में चौदह
पीढ़ी और बेबीलोन की गुलामी से मसीह
तक चौदह पीढ़ी हुयी।
18 यीशु मसीह का जन्म इस तरह हुआः
यूसुफ़ के साथ मरियम की सगाई के बाद
इसके पहले कि उनका कोई शारीरिक
सम्बन्ध हो, पवित्र आत्मा के द्वारा वह
गर्भवती हो गयी। 19 एक भले व्यक्ति होने
की वजह से यूसुफ़ ने जो मरियम की
बेइज़्ज़ती नहीं देख सकता था, चुपचाप से
अपनी सगाई की शपथ को तोड़ना चाहा।
20 लेकिन जब वह इन बातों के बारे में
सोच ही रहा था, तभी अचानक सपने में प्रभु
का एक स्वर्गदूत प्रगट होकर कहने लगा,
“दाऊद के वंशज यूसुफ़, मरियम को अपने
यहाँ लाने से मत डरो। उसके गर्भ का फल
पवित्र आत्मा की तरफ़ से है। 21 उसके एक

बेटा पैदा होगा, तुम उसका नाम यीशु रखना,
क्योंकि वह अपने लोगों को उनके गुनाहों की
सज़ा से बचाएगा।”
22 यह सब इसलिए हुआ ताकि जो कुछ
प्रभु ने नबी के ज़रिए कहा था, वह पूरा हो,
वह यह कि, 23 “देखो, एक कुँवारी गर्भवती
होगी
और उसके एक बेटा होगा। उसका नाम
‘इम्मानुएल’,
जिस का मतलब है ‘प्रभु हमारे साथ’
रखा जाएगा।”
24 नींद से जाग उठने के बाद उसने वही
किया, जिसे करने के लिए प्रभु के स्वर्गदूत
ने आज्ञा दी थी। उसने मरियम को अपनी
पत्नी करके अपना लिया। 25 लेकिन मरियम
के साथ उसने तब तक शारीरिक सम्बन्ध
नहीं रखा जब तक मरियम ने अपनी पहली
संतान को जन्म न दिया और उसने उसका
नाम यीशु रखा।

2 राजा हेरोदेस के दिनों में, यहूदा के
बेतलेहम में जब यीशु का जन्म हुआ,
तब पूर्व देश से ज्योतिषी यरुशलेम में आकर
पूछने लगे, 2 “यहूदियों के राजा जिन का
जन्म हुआ है, कहाँ हैं? क्योंकि हम ने पूर्व
में उनका तारा देखा है और हम उनकी
इबादत[a] करने आए हैं।” 3 हेरोदेस राजा और
यरुशलेम के लोग यह सुन कर घबरा गए।
4 तब राजा ने लोगों के प्रमुख पुरोहितों और
शास्त्रियों को इकट्ठा करके पूछा, “मसीह का
जन्म कहाँ हो सकता है?” 5 उन्होंने उसे उत्तर
दिया, “यहूदिया के बेतलेहम में, क्योंकि
भविष्यद्वक्ता के द्वारा ऐसा लिखा गया है:
6 ‘हे बेतलेहम, जो यहूदा के देश में है,
तुम किसी तरह से यहूदा के अगुओं में
से छोटे नहीं हो, क्योंकि तुम में
से एक शासक[b] निकलेगा,
जो मेरे लोगों[c] का चरवाहा होगा।’”
7 तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके
से बुलाकर पूछा, “तारा ठीक किस समय
दिखायी दिया था?” 8 उसने उन्हें यह कह
कर बेतलेहम भेजा कि जाकर उस बालक
के बारे में छानबीन कर लो। जब मिल जाए
तो मुझे खबर दो, ताकि मैं भी आकर उसको
दण्डवत् करूँ।
9 राजा की बात सुन कर वे चल पड़े। पूर्व
में दिखने वाला वह तारा उनके आगे-आगे
चलने लगा, और जिस जगह बालक था उस
जगह के ऊपर जाकर ठहर गया। 10 उस तारे
को देख कर वे बहुत खुश हुए। 11 वहीं घर
के अन्दर जाने के बाद उन ज्योतिषियों ने
यीशु को उनकी माँ के साथ देखा। उन्होंने
मुँह के बल गिर कर यीशु को दण्डवत् किया।
और अपना-अपना थैला खोलकर यीशु को
सोना, लोबान और गन्धरस की भेंट चढ़ायी।
12 परमेश्वर से सपने में हेरोदेस के पास न
जाने की चेतावनी पाकर वे दूसरे रास्ते से
अपने देश को चले गए।
13 उनके जाने के बाद एक स्वर्गदूत ने सपने
में यूसुफ़ से कहा, “उठो! बालक और उसकी
माँ को लेकर मिस्र देश को भाग जाओ। जब
तक मैं तुम से न कहूँ, तब तक वहीं रहना,
क्योंकि हेरोदेस इस बालक की जान लेना
चाहता है।”
14 यूसुफ़ रात ही को उठ कर बालक और
उसकी माँ को लेकर अँधेरे ही में मिस्र की
तरफ़ चल पड़ा। 15 वह हेरोदेस के मरने तक
वहीं रहा, ताकि वह बात जो परमेश्वर ने

[a] 2.2 आराधना [b] 2.6 राजा [c] 2.6 इस्राएलियों

भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही थी, “कि मैंने
अपने बेटे को मिस्र से बुलाया, “पूरी हो।
16 जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों
ने उसके साथ धोखा किया है, तब वह
गुस्से से भर गया और लोगों को भेज कर
ज्योतिषियों द्वारा सही बताए गए समय के
मुताबिक बेतलेहम और उसके आस-पास
के इलाकों में रहने वाले सब दो साल या
उससे छोटी उम्र के लड़कों को मरवा डाला,
17 ताकि जो बात यिर्मयाह नबी के द्वारा कही
गयी थी, वह पूरी होः
18 रामाह में एक करूण नाद सुनाई दिया,
रोना और बड़ा विलाप! राहेल अपने बालकों
के लिए रो रही थी, और चुप नहीं होना
चाहती थी, क्योंकि वे अब जीवित नहीं थे।
19 हेरोदेस के मरने के बाद, प्रभु के दूत ने
मिस्र में यूसुफ़ को सपने में दिखायी देकर
कहा, 20 “उठो, बालक और उसकी माँ को
लेकर इस्राएल देश में चले जाओ, क्योंकि जो
बालक की जान के प्यासे थे, वे मर गए हैं।”
21 वह उठा और बालक और उसकी माँ
को लेकर इस्राएल देश में आया। 22 लेकिन
यह सुन कर कि अरखिलाउस अपने पिता
हेरोदेस की जगह यहूदिया पर शासन कर रहा
है, वहाँ जाने से डरा। फिर सपने में चेतावनी
पाकर गलील प्रदेश में चला गया 23 और
नासरत नाम के नगर में जा बसा, ताकि वह
बात पूरी हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा
कही गयी थी कि, “वह नासरी कहलाएगा”

3 उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला
आकर यहूदिया के जंगल में यह संदेश
देने लगा, 2 “मन बदलो, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य यहीं है है।” 3 यह वही है जिस के बारे में
यशायाह नबी के द्वारा भविष्यद्वाणी की गयी
थी। वह यह कि जंगल में एक पुकारने वाले
की आवाज़ सुनायी दी कि प्रभु परमेश्वर के
आगमन के लिए अपने आप को तैयार करो।
4 यूहन्ना ऊँट के बालों से बने कपड़े पहिनता
था। वह टिड्डियाँ और शहद खाता था।
5 यरुशलेम, सारे यहूदिया और यरदन के
आस-पास के लोग यूहन्ना के पास आने
लगे। 6 अपनी-अपनी अपराधों बुराईयों को
मान लेने के बाद यूहन्ना ने उन्हें यर्दन नदी
में बपतिस्मा दिया। 7 जब उसने बहुत सारे
फ़रीसियों और सदूकियों को बपतिस्मे के
लिए अपने पास आते देखा, तो उसने उन से
कहा, “हे साँप के बच्चो, तुम्हें किस ने बताया
कि भविष्य के न्याय से बचो? 8 इसलिए
तुम्हारे मन के बदलाव का फल तुम्हारे जीवन
में दिखाई दे। 9 इस गलतफ़हमी में मत रहो
कि अब्राहम तुम्हारा पिता है क्योंकि मैं तुम
से कहता हूँ कि इन पत्थरों से परमेश्वर
अब्राहम के लिए बच्चे पैदा कर सकते हैं।
10 अब कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर रखी हुयी
है। इसलिए जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता,
काटा और आग में डाला जाता है।
11 मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ
जो मन बदलाव को दिखाता है, लेकिन जो
मेरे बाद आने वाले हैं, वह मुझ से ज़्यादा
ताकतवर हैं। मैं उनकी जूती उठाने के लायक
भी नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और
आग से बपतिस्मा देंगे। 12 उनका सूप उनके
हाथ में है। वह अपना खलिहान अच्छी तरह
से साफ़ करेंगे। वह अपने गेहूँ को खत्ते में
इकट्ठा करेंगे, लेकिन भूसे को उस आग में
जलाएँगे, जो कभी नहीं बुझेगी। 13 उस समय
यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के
पास बपतिस्मा लेने आए। 14 लेकिन यूहन्ना
ने उन्हें मना करते हुए कहा, “मुझे आपके
हाथ से बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है और
आप मेरे हाथ से बपतिस्मा लेना चाहते हैं?”

15 यीशु ने जवाब में कहा, “अभी ऐसा ही
होने दो, क्योंकि हमें इसी तरह से करना
ज़रूरी है।” तब यूहन्ना ने उनकी बात मान
ली। 16 यीशु बपतिस्मा लेकर जैसे ही पानी
में से ऊपर आए, उनके लिए आकाश खुल
गया। यीशु ने परमेश्वर के आत्मा को फ़ाख़्ते
की तरह उतरते और अपने ऊपर आते देखा।
17 साथ ही आकाश से आवाज़ आयी, “यह
मेरा प्यारा बेटा है, जिस से मैं बहुत खुश हूँ।”

4 बपतिस्मे के बाद पवित्र आत्मा यीशु को
जंगल में ले गया, ताकि शैतान से उनकी
परख की जाए। 2 चालीस दिन और चालीस
रात कुछ नहीं खाने के बाद उन्हें ज़ोरदार भूख
लगी। 3 तब परखने वाले ने पास आकर उन
से कहा, “यदि आप परमेश्वर के बेटे हैं, तो
इन पत्थरों से कहें कि रोटी में बदल जाएँ।”
4 यीशु ने जवाब में कहा, “लिखा है कि
इन्सान सिर्फ़ खाने से नहीं, लेकिन परमेश्वर
के मुँह से निकलने वाले हर शब्द से ज़िन्दा
रहेगा।”
5 तब शैतान ने उन्हें पवित्र नगर यरूशलेम
में मन्दिर की चोटी पर ले जाकर कहा,
6 “अगर आप परमेश्वर के बेटे हैं, तो अपने
आप को नीचे गिरा दीजिए, क्योंकि आपके
बारे में ऐसा लिखा है कि परमेश्वर अपने
स्वर्गदूतों को आज्ञा देंगे ताकि आपके पैरों में
पत्थर से चोट न लगे।”
7 यीशु ने जवाब दिया कि यह भी लिखा है
कि तुम अपने प्रभु परमेश्वर को मत परखो।
8 फिर शैतान ने यीशु को एक बहुत ऊँचे
पहाड़ पर ले जाकर सारी दुनिया के राज्य
और उनकी शान दिखाई। 9 और यह भी
कहा, “अगर आप गिर कर मुझे दण्डवत्
करें, तो मैं यह सब कुछ आपको दे दूँगा।”
10 तब यीशु ने उससे कहा, “भाग यहाँ से
शैतान, क्योंकि लिखा है, कि तुम अपने प्रभु
परमेश्वर को दण्डवत् करो और उन्हीं की
सेवा और उपासना करो।”
11 तब शैतान भाग गया और स्वर्गदूत
आकर यीशु की सेवा में लग गए।
12 जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना को कैद कर
लिया गया है, तो वह खुद गलील को चले
गए। 13 वहाँ से वह नासरत गए और फिर
कफ़रनहूम में जो झील के किनारे ज़बलून
और नप्ताली क्षेत्र में है, रहने लगे; 14 ताकि
यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा कही गयीं बात
पूरी हो:
15 “ज़बूलून और नप्ताली के देश, झील के
रास्ते से यरदन के पार गैर यहूदियों का
गलील।
16 जो लोग अन्धेरे में बैठे थे, उन्होंने बड़ी
रोशनी देखी है। जो मौत के देश और साए में
बैठे थे, उन पर रोशनी चमकी।”
17 उस समय से यीशु ने सिखाना और यह
कहना शुरू किया कि मन बदलो, क्योंकि
स्वर्ग का राज्य नज़दीक ही है।
18 गलील की झील के किनारे से गुज़रते
समय उन्होंने शमौन[a] और अन्द्रियास नामक
दो मछुओर भाईयों को झील में जाल फेंकते
देखा। 19 उन से यीशु ने कहा, “आकर मुझ से
सीखो, मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊँगा।”[b]
।” 20 वे तुरन्त अपने जालों को छोड़कर यीशु
के साथ हो लिए।
21 वहाँ से जैसे ही यीशु आगे बढ़े, दो
और भाईयों, याकूब और उसके भाई यूहन्ना

[a] **4.18** पतरस [b] **4.19** कि किस तरह से मनुष्य के मनों को परमेश्वर के लिए जीतकर उन्हें अनन्त जीवन दिलाया जा सकता है

अर्थात् ज़बदी के बेटों और ज़बदी को जाल
सुधारते हुए देखा और उन्होंने दोनों बेटों को
बुलाया। 22 वे भी तुरन्त अपनी नाव और
अपने पिता, दोनों को छोड़कर यीशु के संग
चल पड़े।
23 यीशु सारे गलील से गुज़रते समय उनके
आराधनालयों में सिखाते और परमेश्वर के
राज्य की खुशखबरी[a] देते और हर तरह
की बीमारी और कमज़ोरी को ठीक करते
गए। 24 पूरे सीरिया में वह मशहूर हो गए।
लोग बीमारों, भूत-प्रेत[b] पीड़ितों, मिर्गी और
लकुवा पीड़ितों को यीशु के पास ले आए।
यीशु ने उन सभी को अच्छा कर दिया।
25 और गलील, दिकापुलिस, यरूशलेम,
यहूदिया और यरदन नदी के पास से भीड़
की भीड़ उनके पीछे चल पड़ी।

5 यीशु भीड़ को देखते ही पहाड़ पर चढ़
कर बैठ गए और शिष्य उनके नज़दीक
आ गए। 2 तब यीशु यह सिखाने लगे,
3 आशीषित[c] वे लोग हैं जो स्वभाव से सीधे
सादे[d] हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
4 आशीषित वे हैं जो दुख मनाते हैं क्योंकि
वे शान्ति पाएँगे।
5 आशीषित वे हैं जो नम्र हैं, क्योंकि वे
पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
6 आशीषित वे हैं जो परमेश्वर के साथ
रिश्ता कायम करने या सही जीवन जीने की
तमन्ना रखते हैं, वही सन्तुष्ट हो पाएँगे।
7 आशीषित वे हैं जो दयालु हैं क्योंकि उन
पर दया की जाएगी।
8 आशीषित वे हैं जिन के मन शुद्ध हैं,
क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
9 आशीषित वे हैं जो मेल कराने वाले
हैं क्योंकि वे परमेश्वर के बेटे-बेटियाँ
कहलाएँगे।
10 आशीषित वे हैं जो मुझ पर विश्वास लाने
या सही जीवन जीने की वजह से सताए जाते
हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
11 आशीषित हो तुम जब लोग मेरे नाम की
खातिर तुम्हें तुच्छ समझें, सताएँ और झूठ
बोल-बोल कर तुम्हारे खिलाफ़[e] सब तरह
की गंदी बातें कहें। 12 खुश और मगन होना,
क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा ईनाम[f] है:
इसलिए कि उन्होंने तुम से पहले आए नबियों
को भी सताया था।
13 तुम इस धरती के नमक हो, लेकिन
अगर नमक अपना स्वाद खो दे, तो इसे फिर
किस तरह नमकीन बनाया जा सकता है?
तब यह बिल्कुल किसी काम का नहीं, सिर्फ़
यह कि बाहर फेंक दिया जाए और इन्सानों
के पैरों से रौंदा जाए।
14 तुम दुनिया की रोशनी हो। जो शहर
पहाड़ पर है, वह छिपा नहीं रह सकता।
15 लोग दीपक जलाकर नीचे नहीं लेकिन
ऊँचाई पर रखते हैं, तभी उस घर के सभी
लोगों को रोशनी मिलती है। 16 इसी तरह
तुम्हारी रोशनी इन्सानों के सामने चमके, कि
वे तुम्हारे स्वर्गिक पिता की बड़ाई करें।
17 यह न समझो कि मैं नियम शास्त्र और
भविष्यद्वक्ताओं की किताबों को रद्द कर
रहा हूँ, बिल्कुल नहीं। मेरा मकसद नैतिक
बातों को उनका सही दर्जा देना है। 18 मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ कि जब तक आकाश
और पृथ्वी(पृथ्वी) खत्म न हो जाएँ, तब तक
परमेश्वर की कही बातों की छोटी से छोटी

[a] 4.23 सुसमाचार [b] 4.24 दुष्टात्मा [c] 5.3 धन्य [d] 5.3 दीन [e] 5.11 विरोध [f] 5.12 फल

बात भी बिना पूरे हुए नहीं रहेगी, एक मात्र या
एक बिन्दु भी नहीं। 19 इसलिए जो कोई इन
छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को
न माने और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह
स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा।
लेकिन जो उनको मानने के साथ सिखाएगा
भी, वही स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहलाएगा।
20 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अगर
तुम्हारी अच्छाईयाँ शास्त्रियों और फ़रीसियों
की अच्छाईयों से बढ़ कर नहीं है, तो तुम्हें
परमेश्वर के राज्य में दाखिला न मिलेगा।
21 तुम सुन चुके हो, कि पुराने समय के
लोगों से कहा गया था कि हत्या न करना।
जो कोई हत्या करेगा वह अदालत में सज़ा के
लायक होगा। 22 लेकिन मैं तुम से यह कहता
हूँ कि जो कोई अपने भाई[a] से क्रोधित रहेगा
वह स्वर्ग की अदालत में सज़ा के लायक
होगा। जो कोई अपने भाई को नालायक कहे
वह स्वर्ग की अदालत में सज़ा के लायक
होगा। जो किसी को बेवकूफ़ कहे वह नरक
की आग के खतरे में होगा।
23 अपनी भेंट चढ़ाते समय यदि अचानक
तुम्हें यह याद आए कि तुम्हारे भाई[b] के मन
में तुम्हारे विषय में कुछ नाराज़गी है, तो
24 अपने भाई[c] से पहले सुलह कर लो, उसके
बाद आकर साफ़ दिल से अपनी भेंट चढ़ाना।
25 जब तक तुम अपने मुद्दई के साथ रास्ते
में हो, झटपट उससे सुलह कर लो, कहीं ऐसा
न हो कि मुद्दई तुम्हें मॅजिस्ट्रेट को सौंपे और
मॅजिस्ट्रेट तुम्हें सिपाही को सौंप दे और तुम
जेल में डाल दिए जाओ। 26 मैं तुम से सच
कहता हूँ कि जब तक तुम पूरी कीमत चुका
न दो, तब तक वहाँ से छूट न पाओगे।
27 तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि गैर
कानूनी यौन सम्बन्ध मत रखना। 28 लेकिन
मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई किसी
महिला को बुरी नज़र से देखे, वह अपने मन
में उससे यौन सम्बन्ध बना चुका। 29 अगर,
तुम्हारी दाहिनी आँख बुराई में गिरने की
वजह बने, तो उसे निकाल कर अपने पास
से फेंक दो। क्योंकि तुम्हारी भलाई इसी में
है कि तुम्हारे अंगों में से एक बर्बाद हो जाए
और तुम्हारी पूरी देह नरक में न डाली जाए।
30 अगर तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हारे बुराई में
गिरने की वजह बने, तो उसे काट कर अपने
पास से फेंक दो। क्योंकि तुम्हारे लिए फ़ायदा
इसी में है कि तुम्हारे अंगों में से एक बर्बाद हो
जाए और तुम्हारी पूरी देह नरक में न डाली
जाए।
31 यह भी कहा गया था कि जो कोई
अपनी पत्नी को छोड़े, तो तलाकनामा भी
दे। 32 लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो
अपनी पत्नी को गैर कानूनी यौन सम्बन्ध के
अलावा किसी और कारण से छोड़ दे, तो
वह उस से व्यभिचार करवाता है। जो कोई
उस त्यागी हुयी से शादी करे, वह व्यभिचार
करता है।
33 तुमने सुना था कि पुराने समय के लोगों
से कहा गया था, कि वे झूठी कसम न खाएँ,
लेकिन प्रभु के लिए अपनी कसम को पूरा
करें। 34 लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि
कभी कसम न लेना, न स्वर्ग की क्योंकि वह
परमेश्वर का राजासन है, 35 न धरती की,
क्योंकि धरती परमेश्वर के पाँव का पीढ़ा है।
यरुशलेम की भी नहीं, क्योंकि वह महाराजा
का शहर है। 36 अपने सिर की कसम भी न

[a] **5.22** या बहन [b] **5.23** या बहन [c] **5.24** या बहन

खाना, क्योंकि तुम एक बाल को भी न सफ़ेद
कर सकते हो, न काला। 37 लेकिन तुम्हारी
बात हाँ की हाँ, या नहीं की नहीं हो। जो कुछ
इस से अधिक होता है वह शैतान की तरफ़
से है।
38 तुम्हें यह बताया गया था कि आँख
के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत।
39 लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि बुरे
इन्सान से झगड़ा मोल न लेना, लेकिन अगर
कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर चाँटा मारे,
तो अपने बाएँ गाल को भी उसकी तरफ़
कर देना। 40 अगर कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती से
तुम्हारा कुरता हड़पना चाहे, तो अपनी शॉल
तक दिए जाने के लिए तैयार रहना। 41 जो
कोई तुम्हें बिना मजदूरी में एक कोस ले जाना
चाहे, तो उसके साथ दो कोस जाने के लिए
तैयार रहना। 42 अगर कोई व्यक्ति तुम से
माँगे, तो उसे दे देना और जो तुम से उधार
लेना चाहे, तो उससे अपना मुँह न मोड़ना।
43 तुम्हें बताया गया था कि अपने पड़ोसी
से प्यार करो और दुश्मन से दुश्मनी रखो।
44 लेकिन मैं तुम से यह कहता हूँ कि अपने
दुश्मनों से प्यार करो और सताने वालों के
लिए प्रार्थना। 45 ऐसा करने से तुम अपने
स्वर्गिक पिता के बेटे-बेटी ठहरोगे, क्योंकि
वह अच्छे बुरे दोनों ही पर अपना सूरज
चमकाते हैं। और वह अच्छे-बुरे दोनों के
लिए बारिश भी भेजते हैं। 46 क्योंकि अगर
तुम अपने प्यार करने वालों ही से प्यार करो,
तो तुम्हें क्या मिलेगा? क्या कर लेने वाले
भी ऐसा नहीं करते? 47 और अगर तुम सिर्फ़
अपने लोगों ही को इज़्ज़त दो, तो कौन सा
बड़ा काम करते हो? क्या दूसरे लोग भी ऐसा
नहीं करते? 48 इसलिए ज़रूरी यह है कि तुम
दयालु बनो, जैसा तुम्हारे पिता भी जो स्वर्ग
में हैं, दयालु हैं।

6 सावधान रहो। तुम लोगों को दिखाने के
लिए अपने अच्छे काम न करो, नहीं तो
अपने स्वर्गिक पिता से बदले में कुछ हासिल
नहीं करोगे।
2 इसलिए जब तुम दान दो, तो अपने आगे
ढोल न पिटवाओ, जैसा ढोंगी लोग सभाओं
और गलियों में करते हैं। 3 जब ज़रूरतमन्द
लोगों को कुछ दो, तो जो तुम्हारा दाहिना
हाथ करता है, उसे तुम्हारा बायाँ हाथ न
जानने पाए। 4 ताकि तुम्हारा दान गुप्त रहे।
तब तुम्हारे पिता जो गुप्त में देखते हैं, तुम्हें
आशीषित करेंगे।
5 जब तुम प्रार्थना करो, तो ढोंगियों की तरह
न बनो। लोगों को दिखाने के लिए सभाओं में
और सड़कों के मोड़ पर खड़े होकर प्रार्थना
करना उनको बड़ा अच्छा लगता है। मैं तुम
से सच कहता हूँ कि उन्हें उनका प्रतिफल
मिल चुका। 6 लेकिन जब तुम प्रार्थना करो,
तो अपने भीतरी कमरे में जाओ, दरवाज़ा
बन्द करके अपने स्वर्गिक पिता से अकेले में
प्रार्थना करो। तब तुम्हारे पिता जो सब कुछ
देखते हैं, तुम्हें प्रतिफल देंगे। 7 प्रार्थना करते
समय दूसरे लोगों की तरह, जो अविश्वासी
हैं, बकबक मत करो। क्योंकि वे समझते
हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी
जाएगी। 8 इसलिए उनकी तरह मत बनो
क्योंकि तुम्हारे स्वर्गिक पिता तुम्हारे माँगने से
पहले जानते हैं कि तुम्हारी क्या-क्या ज़रूरतें
हैं।

9 इसलिए इस तरह से प्रार्थना करो, “हे
हमारे स्वर्गिक पिता, आप जो स्वर्ग में हैं,
आपका नाम पवित्र[a] माना जाए।
10 आपका राज्य आए। जैसे आपकी इच्छा
स्वर्ग में पूरी होती है, इस पृथ्वी पर भी हो।
11 हमारे हर दिन की रोटी[b] आज हमें दें।
12 जिस तरह हम ने अपने अपराधियों को
माफ़ किया है, वैसे ही हमारे अपराधों को
माफ़ करें।
13 हमें प्रलोभन में पड़ने न दें, लेकिन बुराई
से[c] बचाएँ; क्योंकि राज्य और पराक्रम और
शान[d] हमेशा आपकी ही हैं। ऐसा ही हो।
14 इसलिए अगर तुम मनुष्य के अपराध
क्षमा करोगे, तो तुम्हारे स्वर्गिक पिता भी
तुम्हारे अपराध क्षमा करेंगे। 15 परन्तु अगर
तुम लोगों के अपराध माफ़ न करोगे, तो
तुम्हारे परमेश्वर पिता तुम्हारे अपराध माफ़
न करेंगे।
16 जब कभी तुम उपवास करो, तो ढोंगियों
की तरह तुम्हारे मुँह पर उदासी न छायी
रहे। वे अपना मुँह लटकाए रहते हैं, ताकि
दूसरे लोग उन्हें उपवासी जानें। मैं तुम से
सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा
चुके। 17 लेकिन जब तुम उपवास करो तो
अपने सिर पर तेल मलो और चेहरा भी धो।
18 ताकि लोग नहीं लेकिन तुम्हारे आकाशी
पिता जो गुप्त बातों को भी जानते हैं, तुम्हें
उपवासी जानें। इस हालत में तुम्हारे आकाशी
पिता जो गुप्त में देखते हैं, तुम्हें प्रतिफल देंगे।
19 अपने लिए पृथ्वी पर धन सम्पत्ति मत
बटोरो, जहाँ दीमक और फफूँद बिगाड़ते हैं,
और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।
20 लेकिन अपने लिए स्वर्ग में(इस दुनिया के
बाद की ज़िन्दगी के लिये)दौलत इकट्ठा करो,
जहाँ न तो दीमक और फफूँद बिगाड़ते हैं, न
चोर सेंध लगाते और न चुराते हैं। 21 क्योंकि
जहाँ तुम्हारा धन है वहीं तुम्हारा मन भी लगा
रहेगा।
22 देह का दिया आँख है। इसलिए अगर
तुम्हारी आँखें साफ़ हैं, तो सारी देह रोशनीमय
होगी। 23 परन्तु अगर आँख अन्धकारमय
होगी, तो सारा शरीर भी अन्धकारमय हो
जाएगा। इसलिए तुम में जो ज्योति है, वह
अगर बुझ जाए, तो वह अन्धियारा कितना
भयानक होगा।
24 कोई इन्सान एक ही समय में दो
मालिकों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि
वह एक से दुश्मनी और दूसरे से मोहब्बत
रखेगा, या एक के प्रति वफ़ादार रहेगा और
दूसरे से धोखाधड़ी करेगा। तुम परमेश्वर
और दौलत दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
25 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि अपने
जीवन की चिन्ता करके यह मत कहना कि
हम क्या खाएँगे क्या पीएँगे या क्या पहिनेंगे?
क्या जीवन भोजन से और देह कपड़ों से बढ़
कर नहीं? 26 आकाश के पक्षियों को देखो।
वे न बोते, न काटते हैं, न गोदाम में रखते हैं।
तौभी तुम्हारे स्वर्गिक पिता उनको खिलाते
हैं। क्या तुम्हारी कीमत उन से कहीं ज़्यादा
नहीं है? 27 तुम में कौन है जो चिन्ता करके
अपनी उम्र में एक सेकेण्ड बढ़ा सकता है?
28 कपड़ों के लिए फ़िक्र क्यों करते हो?
जंगली फूलों पर ध्यान लगाओ कि वे कैसे
बढ़ते हैं। वे न तो मेहनत करते हैं, न कातते
हैं। 29 फिर भी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलैमान
भी, अपनी सारी शान में उन में से किसी
की तरह कपड़े पहने हुए न था। 30 इसलिए
जब परमेश्वर मैंदान की घास को जो आज

[a] **6.9** सभी देवी-देवताओं, इश्वरों से अलग और अनुठा जानना [b] **6.11** खाना और ज़रूरत की चीज़ें [c] **6.13** शैतान से [d] **6.13** महिमा

है और कल आग में झोंकी जाएगी, ऐसे
कपड़े पहनाते हैं, तो हे अल्पविश्वासियो,
तुम को वह क्यों नहीं पहनाएँगे? 31 इसलिए
तुम, चिन्ता करके यह न कहना कि हम
क्या खाएँगे या क्या पीएँगे या क्या पहिनेंगे?
32 क्योंकि यीशु को न मानने वाले इन्हीं सब
बातों को पाने की होड़ में लगे रहते हैं।
तुम्हारे, स्वर्गिक पिता जानते हैं कि तुम्हें इन
चीज़ों की ज़रूरत है। 33 इसलिए पहले तुम
परमेश्वर के राज्य और सही जीवन शैली को
चाहो, तो ये सब चीज़ें भी तुम्हें अपने आप
मिल जाएँगी। 34 आने वाले समय की फ़िक्र
मत करो, क्योंकि भविष्य अपनी फ़िक्र खुद
कर लेगा। आज के लिए आज ही का बोझ
काफ़ी है।

7 दूसरों पर दोष मत लगाओ, ताकि तुम
पर भी दोष न लगाया जाए।
2 क्योंकि जिस तरह से तुम दूसरों को दोषी
ठहराते हो, उसी तरह तुम भी दोषी ठहराए
जाओगे। जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से
तुम्हारे लिए नापा जाएगा।
3 तुम अपने भाई की आँख के तिनके को
क्यों देखते हो और अपनी आँख का लट्ठा
तुम्हें महसूस नहीं होता? 4 जब तुम्हारी ही
आँख में लट्ठा हो, तो तुम अपने भाई से कैसे
कह सकते हो कि लाओ, मैं तुम्हारी आँख से
तिनका निकाल दूँ। 5 हे ढोंगी, पहले अपनी
आँख में से लट्ठा निकाल लो, तब तुम अपने
भाई की आँख का तिनका अच्छी तरह देख
कर निकाल सकोगे।
6 पवित्र चीज़ें कुत्तों को मत दो। अपने मोती
सूअरों के आगे मत डालो। ऐसा न हो कि वे
उन्हें पाँवों के नीचे रौंदे और फिर तुम को
फाड़ डालें।
7 माँगो, तो तुम्हें मिलेगा। ढूँढो, तो
तुम पाओगे, खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए
दरवाज़ा खोला जाएगा। 8 क्योंकि जो कोई
माँगता है, उसे मिलता है और जो ढूँढता है,
वह पाता है। जो खटखटाता है उसके लिए
खोला जाएगा।
9 तुम में से ऐसा कौन इन्सान है, कि
अगर उसका बेटा उस से रोटी माँगे, तो
वह उसे पत्थर देगा? 10 या मछली माँगे,
तो उसे साँप देगा? 11 इसलिए जब तुम बुरे
होने के बावजूद, अपने बच्चों को फ़ायदेमन्द
चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारे स्वर्गिक
पिता अपने माँगने वालों को अच्छी चीज़ें
क्यों न देंगे? 12 इसलिए जो कुछ तुम चाहते
हो कि इन्सान तुम्हारे साथ करें, तुम भी
उनके साथ वैसा ही करो, क्योंकि मूसा और
भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है।
13 सकरे फाटक से भीतर जाओ, क्योंकि
बड़ा है वह फाटक और चौड़ा है वह
रास्ता, जो बर्बादी को पहुँचाता है। ज़्यादातर
लोग इस रास्ते पर चलते हैं। 14 लेकिन
छोटा फाटक और सकरा रास्ता जीवन को
पहुँचाता है। इस रास्ते पर चलने वाले बहुत
थोड़े हैं।
15 झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सचेत रहो, जो
हैं तो फाड़ खाने वाले भेड़िए, लेकिन भेड़ों के
वेष में तुम्हारे पास आते हैं। 16 इन लोगों के
फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या झाड़ियों
से अंगूर या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?
17 इसी तरह हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल
पैदा करता है और खराब पेड़ खराब फल
पैदा करता है। 18 अच्छा पेड़ खराब फल नहीं
ला सकता, न ही एक खराब पेड़ अच्छा फल
ला सकता है। 19 हर एक पेड़ जो अच्छा फल
नहीं लाता, काटा और आग में फेंका और

जला दिया जाता है। 20 इस तरह, तुम उनके
फलों से उन्हें पहचान लोगे।
21 हर एक जन जो मुझ से प्रभु, प्रभु कहता
है, परमेश्वर के राज्य में दाखिल नहीं होगा,
लेकिन वही जो स्वर्ग में रहने वाले मेरे पिता
की इच्छा को पूरी करता है, उसमें प्रवेश
पाएगा। 22 उस दिन बहुत से लोग मुझ से
कहेंगे, "प्रभु-प्रभु, क्या हम ने आपके नाम से
संदेश नहीं दिया, दुष्टात्माओं को नहीं खदेड़ा[a]
और बहुत से चमत्कार के काम नहीं किए?
23 तब मैं उन्हें साफ़-साफ़ कह दूँगा, मेरा तुम
से कभी परिचय हुआ ही नहीं था, मेरे सामने
से दूर हो जाओ।
24 इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुन कर
वैसा ही करता है, जैसा मैंने सिखाया है,
वह उस बुद्धिमान इन्सान की तरह ठहरेगा,
जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया। 25 पानी
बरसा, बाढ़ आई, हवाओं के थपेड़े पड़े,
उसके बावजूद, वह घर नहीं गिरा, क्योंकि
वह चट्टान पर बनाया गया था। 26 हर एक
जन जो मेरी बातों को सुन कर उसके अनुसार
चलता नहीं, एक ऐसे बेवकूफ़ इन्सान की
तरह है जिस ने अपना घर बालू पर बनाया।
27 पानी बरसा, बाढ़ आयी और तेज़ हवाओं
के थपेड़े उस घर पर पड़े और वह घर गिर
पड़ा।
28 जब यीशु ये सब बातें कह चुके, तो लोग
सुन कर बहुत आश्चर्य से भर गए। 29 क्योंकि
वह उन लोगों को बड़े अधिकार से सिखाया
करते थे, न कि उनके शिक्षकों की तरह।

8 जब यीशु उस पहाड़ से उतरे, तो एक
बड़ी भीड़ उनके साथ चल पड़ी। 2 एक
कुष्ट रोगी ने पास आकर यीशु को प्रणाम
करते हुए कहा, "हे प्रभु, अगर आप चाहें तो
मुझे ठीक कर सकते हैं।"
3 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूते हुए कहा,
"मैं चाहता हूँ कि तुम ठीक हो जाओ।" उस
व्यक्ति का कुष्ट रोग तुरन्त ठीक हो गया।
4 यीशु ने उससे कहा, "देखो, बगैर किसी
को बताए पहले पुरोहित[b] के पास जाकर
अपने आपको दिखाओ। उस चढ़ावे को भी
चढ़ाओ ताकि उनके लिये गवाही हो।"
5 जब वह कफ़रनहूम में आए तो एक
सूबेदार ने उनके पास आकर बिनती की,
6 "प्रभु जी, मेरा नौकर, मेरे घर में लकुवे की
बीमारी से पीड़ित है।"
7 यीशु ने उस से कहा, "आकर मैं उसे
अच्छा कर दूँगा।"
8 सूबेदार ने जवाब दिया, "हे प्रभु, मैं इस
लायक नहीं कि आप मेरी छत के नीचे आएँ,
आप सिर्फ़ मुँह से कह दीजिए तो मेरा नौकर
ठीक हो जाएगा। 9 मैं भी तो अधिकारी के
अधीन हूँ और सिपाही मेरे अधीन हैं। जब मैं
किसी से कहता हूँ, उधर जाओ, तो वह जाता
है। जब किसी से कहता हूँ, इधर आओ, तो
वह आता है। जब अपने नौकर से कहता हूँ,
यह करो, तो वह वैसा करता है।"
10 यह सुन कर यीशु ने अचम्भा करते हुए
अपने साथ चलने वाले लोगों से कहा, "मैं
तुम से सच-सच कहता हूँ कि मैंने इस्राएलियों
में भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं देखा। 11 और
मैं तुम से कहता हूँ, पूर्व और पश्चिम से
बहुत से लोग आकर अब्राहम, इसहाक, और
याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।
12 लेकिन राज्य की सन्तान[c] बाहर अँधेरे में
डाल दी जाएगी, जहाँ रोना और दाँतों का
पीसना होगा।"

[a] **7.22** निकाला [b] **8.4** याजक [c] **8.12** इस्राएली

13 तब यीशु ने सूबेदार से कहा, “जाओ,
जैसा तुम्हारा भरोसा[a] है, वैसा ही तुम्हारे लिए
हो।” और उसका नौकर उसी वक्त ठीक हो
गया।
14 यीशु ने पतरस के घर में आकर उसकी
सास को बुखार में पड़े देखा। 15 यीशु ने
उसका हाथ छुआ और उसका बुखार उतर
गया और वह उठ कर उसकी सेवा करने
लगी।
16 जब शाम हुयी तब वे उसके पास बहुत
से ऐसे लोगों को ले आए जिन में भूत-प्रेत[b]
थे। यीशु ने उन भूत-प्रेतों को अपने शब्द
मात्र से निकाल दिया और सब बीमारों
को ठीक किया; 17 ताकि जो बात यशायाह
भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहलवायी गयी थी,
वह पूरी हो कि “यीशु ने खुद ही अपने ऊपर
हमारी कमज़ोरियों को ले लिया और हमारी
बीमारियों को उठा लिया।”
18 यीशु ने अपने चारों तरफ़ एक बड़ी भीड़
को देख कर उन्हें यह हुक्म दिया कि वे झील
के उस पार चले जाएँ। 19 तभी एक धार्मिक
गुरू ने आकर यीशु से कहा, “गुरु जी, आप
जहाँ कहीं जाएँगे, मैं भी आपके साथ रहूँगा।”
20 यीशु ने उससे कहा, “लोमड़ियाँ तो बिलों
में रहती हैं, चिड़ियाँ घोसलों में, लेकिन
परमेश्वर के बेटे के पास सिर रखने तक की
जगह नहीं है।”
21 यीशु के किसी शिष्य ने उन से कहा,
“प्रभु, मेरे पिता जी का देहान्त होने के बाद
मैं आपके साथ हो लूँगा।”
22 यीशु ने उस से कहा, “मेरे साथ आ
जाओ और जो लोग आत्मिक रीति से मरे
हुए हैं, उन्हीं के लिए यह काम छोड़ दो।”
23 जब वह नाव पर चढ़े, तो उनके शिष्य
भी उनके साथ नाव पर सवार हो गए।
24 कुछ ही समय के बाद जब यीशु सो रहे
थे, एक ऐसा बड़ा तूफ़ान आ गया कि नाव
लहरों से डोलने लगी। 25 तब उन्होंने उनके
पास आकर उन्हें जगाते हुए कहा, “यीशु जी,
हमें बचाईए, नहीं तो हम सब मर जाएँगे।”
26 यीशु ने उन से कहा, “हे कम विश्वास
वालो, तुम डर क्यों रहे हो”? तब यीशु ने उठ
कर आँधी और पानी को जैसे ही डाँटा, सब
कुछ शान्त हो गया।
27 शिष्य अचम्भा करके कहने लगे कि यह
कैसा इन्सान है कि आँधी और पानी भी
उसका हुकुम मानते हैं।
28 जब यीशु उस पार गदरेनियों के देश में
पहुँचे, तो दो व्यक्ति जिन में दुष्टात्माएँ थीं,
कब्रों से निकलते हुए उन्हें मिले। वे इतने
भयंकर थे कि उस रास्ते से कोई भी नहीं
गुज़र सकता था। 29 उन्होंने चिल्लाकर कहा,
“हे परमेश्वर के बेटे, हमें आप से क्या लेना
देना? क्या समय पूरा होने से पहले ही आप
हमें दुख देने आए हैं?”
30 कुछ ही दूरी पर वहाँ एक सूअरों का
झुण्ड चर रहा था। 31 इसलिए दुष्टात्माओं
ने यह याचना की, कि अगर वह उनको
निकालते भी हैं तो उन्हें वहाँ चरते हुए सूअरों
में भेज दें।
32 यीशु ने जवाब में कहा, “निकल
जाओ।” उन दोनों आदमियों में से निकलते
ही दुष्टात्माएँ उन सूअरों में बैठ गयीं।
33 सूअरों की देख-रेख करने वाले भाग कर
शहर में आ गए। वहाँ उन्होंने लोगों को पूरी
घटना बताई। यह भी कि दुष्टात्माओं से बन्धे
आदमियों के साथ क्या हुआ। 34 यह सुन कर
पूरा शहर यीशु से मिलने के लिए उमड़ पड़ा।
यीशु को देखते ही उन्होंने उन से कहा कि
हमारे यहाँ से कहीं और चले जाएँ।

[a] **8.13** विश्वास [b] **8.16** दुष्टात्मा

9 फिर यीशु एक नाव पर बैठ कर झील
के उस पार अपने गाँव जा पहुँचे। 2 तभी
लोग चारपाई पर लकुवे से पीड़ित एक
व्यक्ति को उनके पास ले आए। यीशु ने
उनके विश्वास को देख कर अपंग व्यक्ति
से कहा, “बेटा, हिम्मत रखो। तुम्हारे गुनाहों
की माफ़ी[a] तुम्हें मिल चुकी है।”
3 उन में से कुछ विद्वानों ने आपस में कहा,
“यह इन्सान तो परमेश्वर की निन्दा कर रहा
है।”
4 उनके विचारों को जान कर यीशु ने कहा,
“तुम अपने मन में बुरा क्यों सोच रहे हो?
5 क्या कहना आसान है यह कि तुम्हारे
सारे अपराध माफ़ हुए या, उठो और चलने
लगो? 6 लेकिन इसलिए कि तुम यह जान लो
परमेश्वर के बेटे को इस दुनिया में अपराधों
को माफ़ करने का अधिकार है।” इसके
बाद ही यीशु ने उस अपंग इन्सान से कहा,
“उठो, अपनी चारपाई उठा कर अपने घर
चले जाओ।”
7 वह तुरन्त उठ कर अपने घर चला गया।
8 जब भीड़ ने यह देखा तो आश्चर्य से भर कर
उस परमेश्वर की बड़ाई करने लगी, जिन्होंने
मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया था।
9 वहाँ से निकलने के बाद यीशु ने मत्ती
नामक एक व्यक्ति को टॅक्स आफ़िस में
बैठे देखा। उससे यीशु ने कहा, “मेरे साथ
आओ।” वह तभी उठा और यीशु के साथ
हो लिया।
10 अब जब कि यीशु घर में खाना खाने बैठे
हुए थे, बहुत से टॅक्स लेने वाले और दुष्ट लोग
यीशु और उनके शिष्यों के साथ आकर बैठे।
11 जब फ़रीसियों ने देखा तो शिष्यों से कहा,
“तुम्हारे गुरू टॅक्स लेने वालों और दुष्टों के
साथ खाना क्यों खाते हैं?”
12 जब यीशु ने यह सुना, तो उन से कहा,
“जो स्वस्थ हैं उन्हें डॉक्टर की ज़रूरत नहीं
पड़ती है, लेकिन उन्हें जो बीमार होते हैं,
उसकी आवश्यकता होती है। 13 जाओ और
इसका मतलब सीखने की कोशिश करो,
मैं तरस चाहता हूँ, कुर्बानी नहीं, क्योंकि मैं
धार्मिक लोगों को नेवता देने नहीं आया हूँ,
लेकिन इसलिए कि अपराधियों का बदलाव
हो।”
14 तब यूहन्ना के शिष्य यीशु के पास आकर
कहने लगे, “ऐसा क्यों है कि हम और फ़रीसी
अक्सर उपवास करते हैं, लेकिन आपके
शिष्य ऐसा नहीं करते?”
15 तब यीशु ने उत्तर में कहा, “क्या दूल्हे के
रहते दूल्हे के दोस्त विलाप कर सकते हैं?
लेकिन वे दिन आने वाले हैं, जब दूल्हा उन
से दूर किया जाएगा और वे उपवास करेंगे?
16 कोई भी व्यक्ति पुराने कपड़े में नए कपड़े
का पैबन्द नहीं लगाता। क्योंकि ऐसा करने
से पैबन्द पुराने कपड़े को खींच लेगा और
वह और ज़्यादा फट जाएगा। 17 लोग तुरन्त
निकाला हुआ अंगूर का रस पुरानी चमड़े
की थैलियों में नहीं भरते हैं। ऐसा करने से
वे थैलियाँ फट जाती हैं और अंगूर का रस
बह जाता है, और थैलियाँ बर्बाद हो जाती
हैं। लेकिन नया अंगूर का रस नयी थैलियों में
भरते हैं और वह दोनों बची रहती हैं।”
18 जब कि यीशु ये बातें कह ही रहे थे कि
देखो, एक प्रधान ने आकर उन्हें प्रणाम करते
हुए कहा, “मेरी बेटी अभी मरी है, लेकिन
चल कर अपना हाथ उस पर रखें, तो वह
ज़िन्दा हो जाएगी।” 19 यीशु उठ कर अपने
शिष्यों को संग लेकर उसके साथ चल पड़े।
20 इसी बीच एक महिला ने जिसे बारह
साल से खून बहने की बीमारी थी, पीछे से

[a] 9.2 अपराध क्षमा

आकर उनके पहरावे के छोर को छू लिया।
21 वह अपने आप से कहा करती थी, "अगर
मैं उनके कपड़ों को ही छू लूँ, तो अच्छी हो
जाऊँगी।"
22 लेकिन यीशु ने जैसे ही पीछे मुड़ कर
देखा, तो उससे कहा, "बेटी, हिम्मत रखो।
तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें अच्छा कर दिया
है।" उसी क्षण से वह महिला अच्छी हो गयी।
23 जब यीशु उस प्रधान के घर में पहुँचे,
तो वहाँ बांसुली बजाने वालों और भीड़
को हुल्लड़ मचाते देख कर कहा, 24 "किनारे
हटो, लड़की मरी नहीं है, लेकिन सो रही
है।" यह सुनते ही वे लोग यीशु पर हँसने
लगे। 25 लेकिन जब भीड़ निकाल दी गयी
तो उन्होंने अन्दर जाकर लड़की का हाथ
पकड़ा, और वह जी उठी। 26 इस बात की
खबर उस सारे देश में फैल गयी।
27 जब यीशु वहाँ से आगे बढ़े, तो दो अन्धे
उनके पीछे यह पुकारते हुए चले, "हे दाऊद
के वशंज, हम पर दया करें।"
28 जब वह घर में पहुँचे, तो वे अन्धे उनके
पास आए और यीशु उन से बोले, "क्या तुम्हें
यह विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूँ?"
उन्होंने यीशु से कहा, "जी हाँ प्रभु।"
29 तब यीशु ने उनकी आँखें छू कर कहा,
"तुम्हारे विश्वास के अनुपात में तुम्हारे लिये
हो।" 30 उसी समय उनकी आँखें खुल गयीं
और यीशु ने उन्हें सख्त हुक्म देकर कहा,
"सावधान, किसी को भी यह बात मालूम न
हो।" 31 लेकिन उन्होंने निकल कर सारे देश
में यीशु के नाम को फैला दिया।
32 जब वे बाहर जा रहे थे, तो लोग एक गूँगे
को जिस में दुष्टात्मा थी, उनके पास ले आए।
33 जब दुष्टात्मा निकाल दी गयी, तो गूँगा
बोलने लगा और भीड़ ने हैरान होकर कहा,
"इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।"
34 लेकिन फ़रीसियों ने कहा, "यीशु तो
दुष्टात्माओं के मुखिया[a] की मदद से
दुष्टात्माओं को निकालते हैं।"
35 यीशु सब नगरों और गाँवों में जाकर
उनकी सभाओं में उपदेश देते और परमेश्वर
के शासन के बारे में बताते रहे। वहाँ पर वे
हर तरह की बीमारी और कमज़ोरी को दूर
करते रहे। 36 जब उन्होंने भीड़ को देखा, तो
उनके दिल में करुणा उमड़ आई, क्योंकि वे
उन भेड़ों की तरह थे जिन का कोई देख-रेख
करने वाला नहीं था। वे व्याकुल और भटके
हुए से थे। 37 तब उन्होंने अपने शिष्यों से
कहा, "पके हुए खेत तो बहुत हैं, लेकिन
मजदूर थोड़े हैं। 38 इसलिए खेत के मालिक
से प्रार्थना करो कि वह फ़सल काटने मजदूरों
को भेजे।

10 फिर यीशु ने अपने बारह शिष्यों को
पास बुलाकर, उन्हें गंदी आत्माओं
पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालने के
साथ-साथ सब तरह की बीमारियों और
कमज़ोरियों को दूर करें।
2 बारह प्रेरितों के नाम हैः शमौन पतरस,
उसका भाई आन्द्रियास, ज़बदी का
बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना।
3 फ़िलिप्पुस, बरतुल्मै थोमा और टॅक्स
लेने वाला मत्ती, हलफ़ै का बेटा याकूब
और तद्दै। 4 शमौन कनानी और यहूदा
इस्करियोती, जिस ने यीशु को पकड़वाया
था।
5 इन बारहों को यीशु ने यह हुकुम दिया
था कि गैरयहूदियों की तरफ़ न जाना और

[a] 9.34 सरदार

सामरियों के किसी इलाके में दाखिल न
हों। 6 लेकिन इस्राएल की खोई हुयी भेड़ों
के पास जाना। 7 जाते-जाते लोगों को यह
बताना कि स्वर्ग का राज्य नज़दीक आ गया
है। 8 बीमारों को ठीक करो, मरे हुओं को
जिलाओ, कुष्ट रोगियों को अच्छा करो,
दुष्टात्माओं को निकालो, तुमने मुफ़्त में पाया
है, मुफ़्त में दो भी।
9 अपने झोले में न सोना, न रूपा, न ताँबा
रखना। 10 यात्रा के लिए न झोली रखो, न
दो जोड़ी कमीज़, न जूते और न ही लाठी,
क्योंकि मेहनत करने वाले की ज़रूरत पूरी
होनी चाहिए।
11 जिस किसी गाँव में जाओ, तो मालूम
करो, कि वहाँ कौन तुम्हें ग्रहण करता है?
जब तक तुम गाँव न छोड़ो, इसी व्यक्ति के
यहाँ रहना। 12 उसके घर में दाखिल होते ही
उस को आशीष देना। 13 यदि उस घर के लोग
लायक होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद उन तक
पहुँचेगा। लेकिन अगर वे लायक न हों, तो
तुम्हारा आशीर्वाद तुम्हारे पास लौट आएगा।
14 जो कोई तुम्हें अपनाएगा नहीं और तुम्हारी
बात नहीं मानेगा, उस घर या उस शहर से
निकलते हुए अपने पाँव की धूल झाड़ डालो।
15 मैं तुम से सच कहता हूँ कि इन्साफ़ के
दिन सदोम और अमोरा की हालत उस शहर
से ज़्यादा सहने के लायक होगी।
16 देखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों
की तरह भेजता हूँ इसलिए साँपों की तरह
बुद्धिमान और फ़ाक्ते की तरह भोले बनो।
17 लेकिन लोगों से संभलकर रहना। इसलिए
कि वे तुम्हें सभा के सुपुर्द कर देंगे। वे
अपने आराधनालय में तुम्हें चाबुक से मारेंगे।
18 तुम मैंजिस्ट्रेट और राजाओं के सामने
मेरी खातिर लाए जाओगे ताकि उनके और
गैरयहूदियों के लिए गवाह ठहरो। 19 लेकिन
जब वे तुम्हें सुपुर्द करें, तो क्या और कैसे
बोलेंगे, यह सोचना भी मत। क्योंकि तुम्हें
क्या कहना चाहिए, यह उसी पल तुम्हें बता
दिया जाएगा। 20 इसलिए कि बोलने वाले
तुम नहीं, लेकिन तुम्हारे पिता का आत्मा है
जो तुम में से बोलता है।
21 और भाई अपने भाई को और पिता
अपने बच्चों को मारे जाने के लिए सौपेंगे। बच्चे
अपने पिता के खिलाफ़ बलवा करेंगे और
उनकी मौत का कारण बनेंगे। 22 मेरे नाम की
खातिर सब लोग तुम से नफ़रत करेंगे, लेकिन
जो आखिर तक टिका रहेगा, उसी को मुक्ति
मिलेगी। 23 जब वे तुम्हें एक शहर में सताएँ,
तो दूसरे शहर को भाग जाना। क्योंकि मैं तुम
से सच कहता हूँ कि इसके पहले कि तुम
इस्राएल के सभी शहरों में जा पाओ, मनुष्य
का पुत्र आ जाएगा।
24 शिष्य अपने गुरू से बढ़ कर नहीं है, न
ही नौकर अपने मालिक से।
25 शिष्य के लिए इतना ही काफ़ी है कि
वह अपने गुरू की तरह हो और नौकर
अपने मालिक की तरह। अगर उन्होंने घर के
मालिक को बालज़बूब कहा है, तो जो उनके
परिवार के हैं उन्हें और बहुत कुछ क्यों नहीं
कहेंगे।
26 इसलिए उन से मत डरना। क्योंकि कुछ
भी ढँका नहीं है जो रोशनी में नहीं आएगा,
या किया गया है जो जाना नहीं जाएगा। 27 मैं
जो कुछ अँधेरे में तुम से कहूँ, उसे रोशनी
में बताना। जो कुछ तुम कानों में सुनो, उसे
घर के ऊपर से चिल्लाना। 28 उन से मत डरना
जो देह को बर्बाद कर सकते हैं लेकिन वे
आत्मा को नुकसान नहीं पहुँचा सकते। सिर्फ़
उन से डरना जो देह और आत्मा दोनों ही को
नरक में डाल सकते हैं, अर्थात् परमेश्वर।
29 क्या एक सिक्के में दो गौरैया नहीं बिकती

हैं? फिर भी तुम्हारे पिता के बिना जाने, उन में
से एक भी ज़मीन पर नहीं गिरती है। 30 इसी
तरह से तुम्हारे सिर के बाल तक गिने हुए
हैं। 31 इसलिए डरना नहीं। गौरैयों से बढ़ कर
तुम्हारी कीमत है।
32 जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान
लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गिक पिता के
सामने मान लूँगा 33 इसलिए जो कोई लोगों
के सामने मेरा इन्कार करता है, मैं भी
अपने स्वर्गिक पिता के सामने उसका इन्कार
करूँगा।
34 ऐसा मत समझो कि इस दुनिया में मेरे
आने से रिश्तेदारों में आपसी सम्बन्ध सदैव
अच्छे होंगे, नहीं, लेकिन मेरी वजह से लोगों
में आपस में फूट पड़ जाएगी। 35 मेरी वजह
से बाप बेटे की, बेटा बाप की खिलाफ़त
करेगा। माँ बेटी की, बेटी माँ की सास बहू
की और बहू सास की खिलाफ़त करेगी।
36 इन्सान के दुश्मन उसके घर के लोग ही
होंगे।
37 जो कोई मुझ से ज़्यादा अपने पिता या
माता को चाहता है, वह मेरे काम का नहीं
है। जो मुझ से ज़्यादा अपने बेटे या बेटी को
चाहता है, वह भी मेरे लायक नहीं है। 38 जो
कोई अपने क्रूस को उठा कर मेरे मुताबिक
ज़िन्दगी नहीं बिताता है, वह भी मेरे काम का
नहीं है। 39 जो व्यक्ति अपने लिए ही जीना
चाहता है, वह अपनी ज़िन्दगी से हाथ धो
बैठेगा। और जो मेरे वास्ते अपनी ज़िन्दगी
कुर्बान करेगा वह उसे पा लेगा।
40 जो तुम्हें कबूल करता है, वह मुझे
कबूल करता है। जो मुझे अपनाता है, वह
मेरे भेजने वाले को अपनाता है। 41 जो
एक भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता की
तरह सम्मान देता है, वह भविष्यद्वक्ता का
प्रतिफल पाता है। 42 मैं सच कहता हूँ, कि जो
कुछ न समझे जाने वाले लोगों को यह जानते
हुए कि वे मेरे शिष्य हैं, एक प्याला ठंडा
पानी दे, वह अपने पुरस्कार[a] से चूकेगा नहीं।

11 अपने बारह शिष्यों को आज्ञा देने के
बाद यीशु उनके शहरों और गाँवों में
सिखाने के लिए चल पड़े।
2 यीशु के कामों के बारे में जब यूहन्ना ने
जेलखाने में सुना, तो अपने दो शिष्यों को
पूछ-ताछ के लिए भेजा। 3 यूहन्ना के शिष्यों
ने उससे पूछा, “क्या आप ही वह हैं जो आने
वाले थे, या हम किसी दूसरे का इन्तज़ार
करें?”
4 यीशु ने जवाब में कहा, “जो कुछ तुमने
सुना और देखा है, जाकर बता दो, 5 अन्धे
देखते हैं, लँगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए
जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते
हैं और गरीबों[b] को खुशी की खबर सुनायी
जाती है। 6 आशीषित व्यक्ति वह है जो मेरी
वजह से ठोकर न खाए[c]।”
7 यूहन्ना के शिष्य जाने वाले ही थे कि यीशु
भीड़ को यूहन्ना के बारे में बताने लगे, “तुम
जंगल में क्या देखने गए थे? हवा से हिलाए
जाने वाले सरकण्डे को? 8 लेकिन तुम देखने
क्या गए थे? बहुत बढ़िया कपड़े पहने हुए
इन्सान को? देखो, जो लोग बहुत बढ़िया
कपड़े पहिनते हैं, वे राजमहल में रहते हैं।
9 लेकिन तुम देखने क्या गए थे? एक नबी
को? हाँ, मैं तो कहूँगा कि एक नबी से ऊँचे
इन्सान को। 10 क्योंकि इसी इन्सान के बारे

[a] **10.42** प्रतिफल [b] **11.5** दीन लोगों [c] **11.6** नाराज़ न हो

में लिखा है, देखो, मैं अपने दूत[a] को तुम्हारे
पास भेजता हूँ, वह तुम्हारे सामने तुम्हारे लिए
रास्ता तैयार करेगा।
11 मैं सच कहता हूँ, इस संसार में जन्म लेने
वालों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बढ़
कर आज तक कोई नहीं हुआ है। लेकिन जो
कोई स्वर्ग के राज्य में सब से कम है, वह
उस से कहीं ज़्यादा है। 12 यूहन्ना बपतिस्मा
देने वाले के दिनों से आज तक स्वर्ग के राज्य
पर ज़ोर होता रहा है और बलवान उसे ज़ोर
लगा कर ले लेते हैं। 13 यूहन्ना तक के सभी
नबियों और नियमशास्त्र ने इन बातों के बारे
में पहले ही से कह दिया था। 14 अगर तुम इसे
मानो, तो यही एलिय्याह है जो आने वाला
था। 15 जो सुनना चाहे वह सुने।
16 लेकिन इस पीढ़ी की तुलना मैं किस
से करूँ? ये लोग उन बच्चों की तरह हैं
जो बाज़ारों में बैठ कर अपने साथियों को
पुकारते रहते हैं। 17 वे कहते हैं, “हम ने
तुम्हारे लिए बांसुली बजायी, लेकिन तुम
नहीं नाचे। हम ने तुम्हारे लिए विलाप किया
लेकिन तुम न रोए। 18 यूहन्ना न खाता आया
और न पीता, लेकिन उस पर आरोप यह
लगाया गया कि उसमें दुष्टात्मा है। 19 मैं एक
आम इन्सान की तरह खाता-पीता हूँ, तो
मुझ पर आरोप लगाया जाता है कि मैं पेटू,
शराबियों, टॅक्स इकट्ठा करने वालों और दुष्ट
लोगों का साथी हूँ।”
20 तब यीशु उन शहरों का उलाहना करने
लगे क्योंकि उन्होंने वहाँ कई चमत्कार किए
थे और फिर भी, उन लोगों ने अपने मन
नहीं बदले थे। 21 खुराजीन, तुम पर हाय।
बेतसेहदा, तुम पर हाय। क्योंकि जो अजीब
काम तुम्हारे यहाँ किए गए, अगर सूर और
सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़ कर और
राख पर बैठ कर उन्होंने बहुत पहले अपना
मन बदल लिया होता। 22 लेकिन मैं तुम से
कहता हूँ कि इन्साफ़ के समय सूर और
सैदा के लोगों की हालत ज़्यादा सहने लायक
होगी। 23 और तुम कफ़रनहूम के लोग जो
घमण्ड की ऊँचाइयों पर हो, नरक की निचाई
तक लाए जाओगे। क्योंकि जो चमत्कार[b]
तुम्हारे बीच किए गए, अगर वे सदोम में किए
जाते, तो वह शहर आज तक बना रहता।
24 लेकिन मैं तुम से यकीनन कहना चाहता
हूँ कि इन्साफ़ के दिन सदोम के लोगों की
हालत तुम्हारी हालत से ज़्यादा बर्दाश्त करने
लायक होगी।
25 उसी समय यीशु ने कहा, “स्वर्ग और
पृथ्वी के स्वामी, पिताजी, मैं आपको
इसलिए धन्यवाद देता हूँ क्योंकि आपने इन
बातों को ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छिपा
रखा है, लेकिन शिशुओं से नहीं। 26 ऐसा
इसलिए हुआ क्योंकि यह बात आपको
पसन्द आयी।
27 सब बातें मेरे पिता ने मुझे सुपुर्द कर
दी हैं। पिता के अलावा बेटे को कोई नहीं
जानता। बेटे को छोड़कर पिता को भी कोई
नहीं जानता और वे लोग ही जानते हैं, जिन
पर बेटा ज़ाहिर[c] करता है।
28 तुम सभी जो मेहनत करते और भारी
बोझ[d] से दबे हो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें
सुकून[e] दूँगा। 29 मेरा जूआ तुम अपने ऊपर
ले लो[f] और मुझ से सीखो। क्योंकि मैं मन में

[a] **11.10** खबर देने वाले [b] **11.23** आश्चर्यकर्म [c] **11.27** प्रगट [d] **11.28** बुराईयाँ और उनकी सज़ा
[e] **11.28** शान्ति [f] **11.29** मेरी शिक्षा का पालन करो

नम्र और दीन हूँ, तब तुम अपने मन में सुकून
पाओगे। 30 क्योंकि मेरा जूआ फ़ायदेमन्द
और बोझ हल्का है।”

12 एक दिन यीशु सब्त के दिन अनाज
के खेतों में से होकर जा रहे थे। भूख
लगने की वजह से यीशु के शिष्य बालों को
तोड़-तोड़ कर दानों को खाने लगे 2 लेकिन
फ़रीसियों ने देख कर कहा, “देखिए यीशु,
आपके शिष्य वही कर रहे हैं जो सब्त के
दिन करना सही नहीं है।”
3 लेकिन यीशु ने जवाब में कहा, “क्या
तुमने यह पढ़ा नहीं है कि जब दाऊद और
उसके साथी भूखे थे, तब उन्होंने क्या किया
था? 4 परमेश्वर के घर में जाकर उसने और
उसके साथियों ने वह रोटी खायी जिसे सिर्फ़
याजक[a] लोगों को खाने की आज़ादी थी?
5 या क्या तुमने नियम शास्त्र में यह नहीं
पढ़ा, कि अगर सब्त के दिन प्रार्थना भवन में
याजक[b] सब्त को तोड़ें, तौभी निर्दोष ठहरते
हैं? 6 लेकिन मैं तुम्हें यह कहता हूँ कि यहाँ
जो तुम्हारे सामने खड़ा है वह प्रार्थना भवन से
भी बड़ा है। 7 लेकिन अगर तुमने इन शब्दों,
‘मैं कुर्बानी नहीं दया चाहता हूँ’ का मतलब
समझ लिया होता, तो तुमने बेगुनाह[c] को
दोषी न ठहराया होता। 8 क्योंकि मैं सब्त के
भी ऊपर हूँ।”
9 वहाँ से जाने के बाद वह आराधनालय में
पहुँचे। 10 वहाँ पर एक आदमी था जिस का
हाथ सूख चुका था। उन्होंने यीशु पर दोष
लगाने के लिए पूछा, “क्या सब्त के दिन में
किसी को स्वस्थ कर देना जायज़ है?”
11 यीशु ने उत्तर दिया, “मान लो तुम में से
किसी के पास एक भेड़ है और सब्त के दिन
किसी गड्ढे में गिर जाती है, क्या उसे तुम
बाहर नहीं निकालोगे? 12 मनुष्य की कीमत
भेड़ से कितनी बढ़ कर है! इसलिए यह
जायज़ है कि सब्त के दिन भलाई की जाए”
13 तब यीशु ने उस व्यक्ति से कहा, “अपने
हाथ को आगे बढ़ाओ।” उसने वैसा ही किया
और उसका सूखा हाथ दूसरे हाथ की तरह
अच्छा हो गया। 14 इसके बाद ही फ़रीसियों
ने बाहर जाकर यीशु के खिलाफ़ एक सभा
बुलायी ताकि उन्हें बर्बाद करने की योजना
बनाएँ।
15 यह मालूम होते ही यीशु वहाँ से चले गए।
एक बड़ी भीड़ भी उनके साथ हो ली और उन
सभी को उन्होंने ठीक कर दिया। 16 उन्होंने
लोगों को यह भी कहा कि वे उनके बारे में
अन्य लोगों को न बताएँ। 17 ताकि यशायाह
भविष्यद्वक्ता के द्वारा जो कुछ भी कहा गया
था, वह पूरा हो।
18 वह यह कि मेरे प्यारे सेवक और प्रिय
को देखो, जिस को मैंने चुना है और जिस
से मैं खुश हूँ। मैं अपनी आत्मा को उस पर
रखूँगा, और वह गैरयहूदियों को न्याय[d] की
खबर देगा।
19 वह न ही झगड़ा करेगा न चिल्लाएगा, न
ही सड़कों पर कोई मनुष्य उसकी आवाज़
सुनेगा।
20 जब तक वह जीत का फ़ैसला न सुना दे,
वह कुचले सरकण्डे को न तोड़ेगा और न ही
टिमटिमाती हुई बत्ती को बुझाएगा।
21 गैर यहूदी उसके नाम पर भरोसा करेंगे।
22 एक दुष्टात्मा से ग्रसित, अन्धे और गूँगे
आदमी को यीशु के पास लाया गया और
यीशु ने उसे अच्छा कर दिया। इसलिए वह
बोलने और देखने लगा। 23 सभी लोग आश्चर्य
से भर कर कहने लगे, “क्या यह दाऊद के
वंश के नहीं हैं?”

[a] 12.4 पुरोहित [b] 12.5 पुरोहित [c] 12.7 निरपराधी [d] 12.18 इन्साफ़

24 फ़रीसियों ने यह सुन कर कहा, “यह
व्यक्ति दुष्टात्माओं के प्रधान बेलज़बूब के
बिना मदद के दुष्टात्माएँ निकाल ही नहीं
सकता।”
25 यीशु ने उनके ख्यालों को जानते हुए
उन से कहा, जिस राज्य में एकता नहीं है,
अपनी बर्बादी का कारण बनता है। जिस
शहर या घर में भी एकता नहीं है, वह स्थिर
नहीं रह सकता। 26 अगर शैतान, शैतान को
निकालने लगा तो वह अपना ही दुश्मन
बन गया। ऐसे में उसका शासन कैसे बना
रहेगा? 27 अगर मैं बालज़बूब की मदद से
दुष्टात्माएँ निकालता हूँ, तो तुम्हारे बेटे उन्हें
कैसे निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारे
न्यायदाता होंगे। 28 लेकिन अगर मैं परमेश्वर
के आत्मा की मदद से दुष्टात्माएँ निकालता
हूँ, तब तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास
आ चुका है।
29 नहीं तो कोई एक ताकतवर आदमी के
घर में घुस कर उसके घर की चीज़ें कैसे
लूट सकता है, जब तक कि वह ताकतवर
आदमी को बाँध न ले? तब वह उसके घर
को लूट लेगा।
30 जो मेरी तरफ़ नहीं है, वह मेरे खिलाफ़
है, और जो बटोरता नहीं है वह बिखराता है।
31 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ हर तरह की
दुष्टता और बुराई माफ़ की जाएगी, लेकिन
पवित्र आत्मा के खिलाफ़ बुराई[a] माफ़ नहीं,
की जाएगी। 32 जो कोई मेरे खिलाफ़ कुछ
कहता है, वह माफ़ी पाएगा, लेकिन जो कोई
पवित्रात्मा के खिलाफ़ कुछ कहता है, वह न
इस दुनिया में और न ही आने वाली दुनिया
में माफ़ी पाएगा।
33 अगर पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके
फल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को बुरा
कहो, तो उसके फल को भी बुरा कहो।
क्योंकि फल से ही पेड़ के अच्छे-बुरे की
पहचान होती है। 34 हे साँप के बच्चो! तुम
दुष्ट होने के बावजूद अच्छी बातें कैसे बोल
सकते हो? क्योंकि मुँह से वही बाहर आता है
जो मन में भरा होता है। 35 भला मनुष्य अपने
भीतर के अच्छे खज़ाने में से अच्छी बातें
निकालता है। बुरा मनुष्य अपने बुरे खज़ाने
में से बुरी बातें निकालता है। 36 लेकिन मैं
कहता हूँ कि इन्साफ़ वाले दिन में लोग अपने
कहे हर एक बेकार शब्द का हिसाब देंगे।
37 क्योंकि तुम अपनी कही हुयी बातों ही
से निर्दोष ठहराए जाओगे, या दोषी ठहराए
जाओगे।
38 तब कुछ धर्म गुरू और फ़रीसियों ने
उत्तर में कहा, “गुरू जी, हम आपकी ओर
से एक अजीब चिन्ह देखना चाहते हैं।”
39 लेकिन यीशु ने जवाब में कहा, “दुष्ट
और व्यभिचारी पीढ़ी चिन्ह देखना चाहती
है। लेकिन नबी योना को छोड़कर, और कोई
चिन्ह उन्हें नहीं दिया जाएगा। 40 जिस तरह
से योना एक बड़ी मछली के पेट में तीन रात
तीन दिन था, उसी तरह मैं भी पृथ्वी के भीतर
तीन रात-दिन बिताऊँगा। 41 इन्साफ़ के दिन
नीनवे के लोग खड़े होकर इस पीढ़ी के लोगों
के ऊपर दोष लगाएँगे क्योंकि उन्होंने योना
की बातों को सुन कर मन बदल लिया था।
देखो, यहाँ पर वह खड़ा है, जो योना से कहीं
बढ़ कर है। 42 इन्साफ़ के समय दक्षिण की
रानी इस पीढ़ी के साथ खड़ी होकर दोष
लगाएगी क्योंकि वह पृथ्वी के एक छोर से

[a] **12.31** निन्दा

इसलिए आयी थी ताकि सुलैमान की बुद्धि
की बातें सुने। देखो, यहाँ पर वह खड़ा है,
जो सुलैमान से भी कहीं बढ़ कर है।
43 लेकिन गंदी आत्मा एक इन्सान के
अन्दर से निकल जाती है तो आराम पाने
के लिए सूखी जगहों में घूमती फिरती है,
लेकिन उसे जगह नहीं मिलती है। 44 तब वह
कहती है कि मैं वापस अपने उसी घर में चली
जाऊँगी, जहाँ से निकल कर आयी थी। जब
वह वहाँ पहुँचती है तो अपने घर को साफ़,
सुथरा, सजा-सजाया और खाली पाती है।
45 तब वह जाकर अपने से ज़्यादा दुष्ट सात
और गंदी आत्माओं को लाकर अपने इस
पुराने घर में समा जाती है। इस इन्सान की
बाद की हालत पहले की हालत से बदतर
हो जाती है। ऐसा ही इस दुष्ट पीढ़ी के साथ
होगा।
46 जब यीशु लोगों से बातचीत कर ही रहे
थे, तभी उनकी माँ जी और भाई, बाहर ही
खड़े हुए उन से बातचीत का मौका ढूँढ रहे
थे। 47 किसी ने उन से कहा, “सुनिए, आपकी
माँ जी और आपके भाई बाहर खड़े आप से
बातें करने के लिए रुके हैं।”
48 लेकिन यीशु ने उस से कहा, “मेरी माँ
और मेरे भाई कौन हैं?” 49 अपने हाथों को
अपने शिष्यों की तरफ़ बढ़ाते हुए यीशु ने
कहा, “देखो, ये हैं मेरी माताएँ, ये हैं मेरे भाई।
50 जो मेरे स्वर्गिक पिता की इच्छा को पूरा
करता है, वही मेरा भाई, बहन और माँ है।”

13 उसी दिन यीशु घर से निकले और
जाकर झील के किनारे बैठ गए।
2 और क्योंकि एक बड़ी भीड़ वहाँ इकट्ठा हो
गयी, इसलिए वह एक नाव पर जाकर बैठ
गए। पूरी भीड़ तट पर ही खड़ी रही। 3 और
यीशु दृष्टान्त देकर उन्हें बहुत कुछ सिखाते
हुए कहने लगे, “एक बीज बोने वाला बीज
बोने निकला। 4 ऐसा करते समय कुछ बीज
रास्ते के किनारे गिरे और चिड़ियों ने आकर
उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पथरीली ज़मीन पर
गिरे जहाँ ज़्यादा मिट्टी नहीं थी। और तुरन्त
उनके अँकुर निकल आए, क्योंकि वे मिट्टी
की सतह ही पर थे। 6 लेकिन जैसे ही धूप
निकली, वे जलने के कारण मुर्झा गए क्योंकि
उन्होंने जड़ तो पकड़ी नहीं थी। 7 कुछ
झाड़ियों के बीच गिरे और झाड़ियों की बढ़त
की वजह से वे बढ़ न सके। 8 लेकिन बाकी
बीज अच्छी ज़मीन पर गिरे और फलवंत हो
गए, कुछ सौ गुना, कुछ साठ गुना और कुछ
तीस गुना फलवंत हो गए। 9 जो सुनना चाहे
वह सुने।”
10 शिष्यों ने आकर यीशु से पूछा, “आप
दृष्टान्तों में उन से क्यों बातें करते हैं?”
11 यीशु ने जवाब में कहा, “इसलिए कि
स्वर्ग के राज्य की छिपी बातों को समझने
की योग्यता तुम में है, लेकिन यह योग्यता
उन्हें नहीं दी गयी है। 12 क्योंकि जिस के पास
है, उसे दिया जाएगा और उसके पास भरपूरी
से होगा। लेकिन जिस के पास नहीं है, उससे
वह भी ले लिया जायेगा जो उसके पास है।
13 इसलिए मैं उन से दृष्टांतों में बातें करता
हूँ क्योंकि देखने के बावजूद वे अन्धे बनते
हैं। सुनने के बावजूद वे न ही सुनते और न
समझते हैं।
14 यशायाह नबी की वह भविष्यद्वाणी उन
में पूरी होती है जो कहता है,‘ तुम सुनने के
बावजूद समझोगे नहीं, तुम देखते तो रहोगे,
लेकिन समझ नहीं पाओगे।’
15 क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया
है और ये कानों से ऊँचा सुनने लगे हैं, उन्होंने
अपनी आँखों को बन्द कर लिया है, ताकि
आँखों से देखने, कानों से सुनने और मन से

समझ लेने पर उन में बदलाव न हो जाए और
मुझ से मुक्ति न पा लें।
16 लेकिन तुम्हारी आँखें आशीषित हैं,
क्योंकि वे देखती हैं। तुम्हारे कान आशीषित
हैं क्योंकि वे सुनते हैं। 17 मैं तुम से सच-सच
कहता हूँ कि बहुत से नबी और धर्मी उन
बातों को देखना माँगते थे, जो तुम देख रहे
हो, लेकिन देख न सके, सुनना माँगते थे, जो
तुम सुन रहे हो, लेकिन सुन न सके।
18 इसलिए बीज बोने वाले का दृष्टान्त
सुनो। 19 जब कभी कोई व्यक्ति राज्य की
बातें सुनता है और समझता नहीं, तो दुष्ट
आत्मा आकर उसके मन में बोयी हुयी बातों
को छीन ले जाता है। यह वही है जिस ने रास्ते
पर गिरे बीजों को अपनाया था। 20 लेकिन
पथरीली ज़मीन पर बीजों को अपनाने वाला
वह है, जो सुनता है और तुरन्त खुशी से
अपना लेता है। 21 लेकिन क्योंकि उसकी
जड़ मज़बूत न होने की वजह से थोड़ी देर ही
बना रहता है। जब परमेश्वर की बातों को
अपनाने की वजह से दबाव या सताव आता
है, वह तुरन्त लड़खड़ा जाता है। 22 काँटेदार
झाड़ी में गिरना उस व्यक्ति की तरफ़ इशारा
है जो परमेश्वर की बातों को तो सुनता है,
लेकिन इस दुनिया की फ़िक्र और धन का
धोखा उन बातों को दबा देते हैं और वे बातें
यों ही सूख जाती हैं। 23 लेकिन अच्छी ज़मीन
में बीजों का गिरना उस इन्सान की तरफ़
इशारा है जो सुन कर समझता है, उसी में
परमेश्वर की बातों का नतीजा दिखता है।
कुछ लोग सौ गुना, कुछ साठ गुना और कुछ
तीस गुना फ़सल पैदा करते हैं।"
24 यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त देते हुए
कहा, "स्वर्ग का राज्य उस इन्सान की तरह
है जिस ने अपने खेत में अच्छे बीज बोए।
25 लेकिन जब लोग सो रहे थे, तभी उसके
दुश्मन ने आकर गेहूँ के खेत में जंगली दाने
बोए और चला गया। 26 जब बालें बढ़ने लगीं
और फ़सल दिखाई दी, तभी जंगली बालें भी
दिखने लगीं।
27 उस मालिक के नौकरों ने आकर उस से
कहा, 'श्रीमान जी, क्या आपने अपने खेत में
अच्छे बीज नहीं बोए थे? तो यह जंगली बालें
कहाँ से आ गयीं?'
28 उसने उन से कहा, 'यह किसी दुश्मन का
काम है।' नौकरों ने उस से कहा, 'क्या आप
चाहते हैं कि हम उन सब को निकाल फेकें?'
29 उसने कहा, 'नहीं, जब तुम जंगली बालों
को निकालोगे तभी उनके साथ गेहूँ की बालें
भी उखड़ आएँगी। 30 इसलिए फ़सल के काटे
जाने तक दोनों को बढ़ने दो, फ़सल काटे
जाने के समय मैं मजदूरों से कहूँगा, पहले
जंगली बालों को जलाने के लिए उनके गठ्ठे
बना लो। लेकिन गेहूँ को मेरे गोदाम में रखने
के लिए इकट्ठा करो।'"
31 उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, कि
स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान
है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में
बो दिया। 32 वह सब बीजों से छोटा तो है
पर जब बढ़ जाता है तब सब साग पात से
बड़ा होता है, और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि
आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर
बसेरा करते हैं।
33 उन्होंने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया,
कि स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस
को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में
मिला दिया और धीरे-धीरे वह सब खमीर हो
गया।
34 ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से
कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उन से कुछ न
कहते थे, 35 ताकि जो वचन भविष्यद्वक्ता
के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो कि "मैं

दृष्टान्त कहने को अपना मुँह खोलूँगा। मैं उन
बातों को जो दुनिया की शुरुआत से गुप्त रही
हैं, प्रगट करूँगा।”
36 तब वह भीड़ को छोड़कर घर में आए,
और उनके चेलों ने उनके पास आकर कहा,
“खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त हमें समझा
दें।”
37 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि अच्छे
बीज का बोने वाला मनुष्य का पुत्र है। 38 खेत
संसार है, अच्छा बीज राज्य की सन्तान, और
जंगली बीज दुष्ट की सन्तान हैं। 39 जिस बैरी
ने उनको बोया वह शैतान है, कटनी जगत का
अन्त है और काटने वाले स्वर्गदूत हैं। 40 सो
जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते
हैं, वैसा ही जगत के अन्त में होगा। 41 मनुष्य
के पुत्र[a] अपने स्वर्गदूतों को भेजेंगे, और वे
उनके राज्य में से सब ठोकरके कारणों और
कुकर्म करने वालों को इकट्ठा करेंगे। 42 और
उन्हें आग के कुंड में डालेंगे, वहाँ रोना और
दाँत पीसना होगा। 43 उस समय क्षमा पाए
लोग अपने पिता के राज्य में सूरज की तरह
चमकेंगे। सुनने वाले इस पर ध्यान दें।
44 स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के
समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा
दिया, और मारे आनन्द के जाकर और सब
कुछ बेच कर उस खेत को मोल लिया।
45 फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के
समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था।
46 जब उसे एक कीमती मोती मिला तो उसने
जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे
मोल ले लिया।
47 फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के
समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर
प्रकार की मछलियों को समेट लाया। 48 और
जब भर गया, तो उस को किनारे पर खींच
लाए, और बैठ कर अच्छी-अच्छी को बर्तनों
में इकट्ठा किया और निकम्मी, निकम्मी फेंक
दीं। 49 जगत के अन्त में ऐसा ही होगा।
स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग
करेंगे, और उन्हें आग के कुंड[b] में डालेंगे।
50 वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।
51 क्या तुमने यह सब बातें समझीं?”
52 उन्होंने उन से कहा, ‘हाँ’।’ यीशु ने उन
से कहा, “इसलिये हर एक व्यक्ति जो स्वर्ग
के राज्य का सदस्य बना है, उस गृहस्थ के
समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी
वस्तुएँ निकालता है।”
53 जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुके, तो
वहाँ से चले गए। 54 और अपने देश में आकर
उनकी सभा में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगे, कि
लोग चकित होकर कहने लगे, कि इन को
यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहाँ से मिले?
55 क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं? और क्या
इस की माता का नाम मरियम और इसके
भाईयों के नाम याकूब और यूसुफ़ और शमौन
और यहूदा नहीं? 56 और क्या इस की सब
बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं? फिर इस को
यह सब कहाँ से मिला?
57 सो उन्होंने उनके कारण ठोकर खाई, पर
यीशु ने उन से कहा, “भविष्यद्वक्ता अपने
देश और अपने घर को छोड़ और कहीं
निरादर नहीं पाता।
58 और यीशु ने वहाँ उनके अविश्वास के
कारण बहुत अजीब काम नहीं किए।

14 उस समय राजा हेरोदेस ने यीशु
के बारे में सुना। 2 उसने अपने
सलाहकारों से कहा, “यह तो यूहन्ना

[a] **13.41** यीशु [b] **13.49** पीड़ा की जगह

बपतिस्मा देने वाला है, वह मुर्दों में से जी
उठा है। इसलिए उससे अजीब काम प्रगट
होते हैं।"
3 क्योंकि हेरोदेस राजा ने अपने भाई
फ़िलिप की पत्नी हेरोदियास की वजह से
उसे बँधवा कर जेल में डलवा दिया था।
4 इसलिए कि यूहन्ना ने उससे कहा था, "यह
जायज़ नहीं कि तुम अपने भाई की पत्नी
को रखो।" 5 हालाँकि वह उसे मरवा डालना
चाहता था लेकिन क्योंकि लोग यूहन्ना को
भविष्यद्वक्ता मानते थे, इसलिए वह लोगों
से डरता भी था।
6 जब हेरोदेस का जन्मदिन मनाया जा रहा
था, हेरोदियास की बेटी ने उनके सामने
नाचकर हेरोदेस को खुश किया। 7 इसलिए
उसने उसे मुँह माँगा ईनाम देने का वायदा
किया। 8 अपनी माँ से इशारा पाकर लड़की
ने एक थाली में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले
के सिर की माँग की। 9 इस माँग से राजा
को बहुत दुख हुआ। फिर भी अपने वायदे
को पूरा करने और बैठे हुए लोगों की वजह
से उसने लड़की की माँग को पूरा करने का
हुक्म दे दिया। 10 उसने अपने लोगों को जेल
में भेज कर यूहन्ना का सिर कटवा दिया,
11 और उसे एक थाली में रख कर लड़की को
दिया गया और लड़की ने उसे अपनी माँ को
दे दिया। 12 और यूहन्ना के शिष्यों ने आकर
उसकी देह को लिया और दफ़नाने के बाद
यीशु को भी बता दिया।
13 यह सुनते ही यीशु एक नाव पर रवाना
होकर एक सुनसान जगह को चले गए। जब
लोगों को यह मालूम पड़ा, तो शहरों से
निकल कर यीशु से मिलने पैदल ही निकल
पड़े। 14 और यीशु ने बाहर एक बड़ी भीड़ को
देख कर तरस खाया और उनके बीमारों को
ठीक कर दिया।
15 जब शाम हुयी तो उनके शिष्य यह कहते
हुए आए, "यह एक सुनसान जगह है और
बहुत देर हो चुकी है। भीड़ को जाने दें, ताकि
वे गाँवों में जाकर अपने लिए खाना खरीद
सकें।"
16 लेकिन यीशु ने शिष्यों से कहा, "यह
ठीक नहीं कि वे जाएँ, तुम्हीं उन्हें कुछ खाने
के लिए दो।"
17 उन्होंने उससे कहा, "यहाँ पर हमारे पास
पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं।"
18 यीशु ने कहा, "उन्हें मुझे दो।" 19 तब
यीशु ने लोगों को घास पर बैठ जाने के लिए
कहा और पाँच रोटियों और दो मछलियों को
हाथों में लेकर, आकाश की तरफ़ देखते हुए
धन्यवाद किया। यीशु रोटियों को तोड़ तोड़
कर चेलों को देते और चेले, लोगों को देते
गए। 20 सभी ने भर पेट खाया और इसके
बावजूद भी बचे हुए टुकड़ों के बारह टोकरे
बच गये। 21 महिलाओं और बच्चों को अगर
न भी गिनें तौभी लगभग पाँच हज़ार पुरुष ही
थे।
22 यीशु ने तुरन्त अपने शिष्यों को
ज़बरदस्ती नाव पर चढ़ाया ताकि वे उन
से पहले झील के उस पार चले जाएँ। इसी
बीच वह लोगों को विदा करते रहे। 23 वह
लोगों को विदा करके, परमेश्वर पिता से
सहभागिता करने को अलग पहाड़ पर चले
गए और शाम को वह वहाँ अकेले थे। 24 उस
समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा
रही थी।
25 तभी यीशु रात के चौथे पहर, झील पर
चलते हुए उनके पास आए। 26 शिष्य यीशु
को झील पर चलते देख कर और घबरा कर
चिल्ला उठे, "भूत...भूत..."
27 यीशु तुरन्त बोल उठे, "हिम्मत बाँधो,
डरो मत, मैं हूँ।"

28 पतरस ने जवाब दिया, “हे प्रभु अगर
आप हैं, तो मुझे आज्ञा दें कि मैं पानी पर
चल कर आपके पास आऊँ।”
29 यीशु ने कहा, “आओ।” तुरन्त पतरस
नाव पर से उतर कर यीशु की तरफ़ जाने
के लिए पानी पर चलने लगा। 30 लेकिन वह
हवा को देख कर डर गया और जैसे ही
डूबने लगा, वैसे ही चिल्ला उठा, “हे प्रभु मुझे
बचाईए।”
31 यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम
लिया और कहा, “हे कम विश्वास वाले,
तूने शक क्यों किया?”
32 जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम
गई। 33 जब वे नाव पर थे उन्होंने यीशु को
दण्डवत् करते हुए कहा, “आप सचमुच में
परमेश्वर के बेटे हैं।”
34 वे सभी झील के पार उतर कर गन्नेसरत
देश में पहुँचे। 35 वहाँ के लोगों ने उन्हें
पहचानकर आस-पास के सारे देशों में खबर
दे दी, और सब बीमारों को उनके पास लाए।
36 और उन से बिनती करने लगे, कि वह
सिर्फ़ अपने कपड़ों की छोर को छूने दें। और
जितने लोगों ने उन्हें छुआ, वे सभी बिल्कुल
अच्छे हो गए।

15 यरुशलेम से आए धार्मिक गुरू
और फ़रीसी यीशु से कहने लगे,
2 “आपके शिष्य बुज़ुर्गों[a] से चले आ रहे
रीति-रिवाज़ों के मुताबिक क्यों नहीं करते?
खाना खाने से पहले वे अपने हाथों को धोते
ही नहीं?”
3 लेकिन यीशु ने उत्तर में कहा, “तुम
अपने रीति रिवाज़ों को पूरा करके परमेश्वर
की आज्ञा को क्यों टालते हो? 4 क्योंकि
परमेश्वर ने यह हुक्म दिया है, अपने पिता
और माता की इज़्ज़त करो और यह भी कि
जो अपने पिता और माता को शाप दे, वह
मार डाला जाए। 5 लेकिन तुम कहते हो कि
अपने माता-पिता से यह कहना सही है, ‘मुझे
मुआफ़ करें, मैंने वह सब कुछ परमेश्वर को
दे दिया है, जो मैंने आपको दे दिया होता।’
6 इस तरह तुम कहते हो, कि उन्हें अपने
माता-पिता को इज़्ज़त देने की ज़रूरत नहीं।
इसलिये तुम अपनी रीति से परमेश्वर की
बातों को टाल देते हो। इस प्रकार तुमने अपने
रीति रिवाज़ों से परमेश्वर के हुक्मों को रद्द
कर डाला है। 7 तुम ढोंगियो, तुम्हारे बारे में
यशायाह ने सही नबूवत की थी,
8 ‘ये लोग अपने मुँह की बातों के द्वारा मेरे
नज़दीक आते हैं और अपने होठों से मुझे
इज़्ज़त देते हैं, लेकिन उनका मन मुझ से दूर
है।
9 वे बिना किसी मतलब के मेरी आराधना
करते हैं, और इन्सानों की आज्ञाओं को
सिद्धान्त के रूप में सिखाते हैं।’”
10 भीड़ को बुलाकर यीशु ने कहा, “सुनो
और समझो। 11 जो इन्सान के मुँह में जाता
है वह उसे अशुद्ध नहीं करता है। लेकिन जो
कुछ मुँह से बाहर आता है, वह उसे अशुद्ध
करता है”
12 तब यीशु के शिष्य आकर उन से कहने
लगे, “क्या आपको मालूम है कि आपकी
कही हुयी इन बातों से फ़रीसियों को बुरा
लगा है?”
13 लेकिन यीशु ने जवाब में कहा, “हर एक
वह पौधा, जिसे मेरे स्वर्गिक पिता ने नहीं
लगाया, उखाड़ा जाएगा। 14 उन्हें रहने दो, वे
अन्धों के अगुवे अन्धा रास्ता दिखाने वाले
हैं और अगर अन्धा अन्धे को रास्ता दिखाए,
तो दोनों गड्ढे में गिर पड़ेंगे।”

[a] **15.2** पूर्वजों

15 तब पतरस ने पूछा, “हमें यह बात
समझाइए।”
16 यीशु ने कहा, “क्यों अब तक तुम्हें समझ
नहीं है? 17 क्या तुम यह नहीं समझते कि
जो कुछ मुँह से जाता है, पेट में चला जाता
है और बाहर निकल जाता है? 18 लेकिन
जो कुछ इन्सान के भीतर से आकर मुँह
से निकलता है, वही उसे अशुद्ध करता है।
19 इन्सान के अन्दर से निकले गंदे ख्याल,
हत्या, व्यभिचार, यौन अनैतिकता, चोरी,
झूठी गवाही, निन्दा। 20 ये बातें अशुद्ध करती
हैं। लेकिन गंदे हाथों से खाना खाने से कोई
अपवित्र नहीं होता है।”
21 तब यीशु वहाँ से निकल कर सूर और
सैदा के इलाकों में गए। 22 अचानक ही वहाँ
से एक कनानी महिला आकर चिल्लाते हुए
कहने लगी, “प्रभु दाऊद के बेटे मुझ पर
रहम करो। मेरी बेटी बुरी तरह से दुष्टात्मा
से पीड़ित है।’
23 लेकिन यीशु ने कुछ नहीं कहा। उनके
शिष्यों ने आकर दोहाई देते हुए कहा, “उसे
रफ़ा दफ़ा कीजिए क्योंकि वह हाथ धोकर
आपके पीछे पड़ी हुयी है।”
24 लेकिन उत्तर में उन्होंने कहा, “इस्राएल
की खोई हुयी भेड़ को छोड़ कर मुझे किसी
और की तरफ़ नहीं भेजा गया है।”
25 लेकिन वह आई, और यीशु को प्रणाम
करके कहने लगी, “हे प्रभु, मेरी सहायता
करो।”
26 यीशु ने उत्तर दिया, कि बच्चों की रोटी
लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।
27 उस स्त्री ने कहा, सच है प्रभु, पर कुत्ते
भी वह चूरचार खाते हैं, जो उनके स्वामियों
की मेज़ से गिरती है।”
28 इस पर यीशु ने उस को उत्तर देकर कहा,
“हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है: जैसा तू
चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो, “और उसकी
बेटी उसी समय से स्वस्थ हो गई।
29 यीशु वहाँ से चल कर, गलील की झील
के पास आए, और पहाड़ पर चढ़कर वहाँ
बैठ गए। 30 और भीड़ पर भीड़, लँगड़ों,
अँधों, गूँगों, टुण्डों और बहुत से लोगों को
लेकर उनके पास आए, और उन्हें यीशु के
पाँवों पर डाल दिया, और यीशु ने उन्हें
ठीक किया। 31 सो जब लोगों ने देखा कि
गूँगे बोलते और टुण्डे ठीक होते और लँगड़े
चलते और अँधे देखते हैं, तो अचम्भा करके
इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की।
32 यीशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा,
“मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि वे
तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ
खाने को नहीं, और मैं उन्हें भूखा विदा करना
नहीं चाहता, कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में थक
कर रह जाएँ।”
33 चेलों ने उन से कहा, “हमें इस जंगल
में कहाँ से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी
बड़ी भीड़ को तृप्त करें?”
34 यीशु ने उन से पूछा, “तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात
और थोड़ी सी छोटी मछलियाँ।”
35 तब यीशु ने लोगों को भूमि पर बैठने
की आज्ञा दी। 36 और उन सात रोटियों और
मछलियों को ले कर धन्यवाद करके तोड़ा
और अपने चेलों को देते गए और चेले लोगों
को। 37 सो सब खा कर तृप्त हो गए और
उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरे हुए सात
टोकरे उठाए। 38 और खाने वाले स्त्रियों और
बालकों को छोड़ चार हज़ार पुरुष थे। 39 तब

वह भीड़ को विदा करके नाव पर चढ़ गए,
और मगदन देश के सिवानों में आए।

16 फ़रीसियों और सदूकियों ने यीशु को
परखने के लिए कहा, “हमें स्वर्ग से
कोई चिन्ह दिखाइये।”
2 यीशु ने उन से कहा, “तुम शाम के समय
कहते हो कि मौसम साफ़ रहेगा क्योंकि
आकाश में लाली छायी हुयी है। 3 सुबह के
समय कहते हो, कि आज आँधी आएगी,
क्योंकि आकाश लाल और धुँधला है। तुम
आकाश को देख कर बता सकते हो कि
मौसम का क्या होगा, लेकिन समयों के
चिन्हों का रहस्य क्यों नहीं समझ पाते?
4 इस युग के दुष्ट और व्यभिचारी लोग
निशान[a] ढूँढते हैं। लेकिन योना के निशान को
छोड़कर कोई और निशान उन्हें नहीं दिया
जाएगा।” इन सब बातों के कहने के बाद
यीशु वहाँ से चले गए।
5 शिष्य झील की दूसरी तरफ़ जाते समय,
रोटी लेना भूल गए थे। 6 यीशु ने उन से कहा,
“देखो, फ़रीसियों और सदूकियों के खमीर
से बचकर रहना।”
7 वे आपस में सोचने लगे कि हम तो रोटी
लाना भूल गए हैं।
8 उनके मन की बात जान कर यीशु ने उन
से कहा, “हे कम विश्वास वाले लोगो, तुम
आपस में ऐसा क्यों सोच रहे हो कि हमारे
पास रोटी नहीं? 9 क्या तुम अब तक समझ
नहीं पाए हो? क्या तुम्हें उन पाँच हज़ार के
लिए पाँच रोटियाँ याद नहीं हैं? 10 और चार
हज़ार की सात रोटियों का क्या? बची रोटियों
के कितने टोकरे तुमने उठाए थे? 11 तुम यह
क्यों नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटियों के
बारे में नहीं कहा था, मैंने तो फ़रीसियों और
सदूकियों के खमीर अर्थात् उनकी शिक्षा के
बारे में सावधान रहने को कहा था।”
12 तब उनकी समझ में आया कि यीशु ने
रोटी के खमीर की बात नहीं की थी लेकिन
फ़रीसियों और सदूकियों की शिक्षा के बारे
में सावधान रहने के लिए कहा था।
13 जब यीशु कैसरिया फ़िलिप्पी के इलाके
में थे तब उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा,
“बताओ, लोग मुझे क्या कहते हैं?”
14 शिष्यों ने जवाब दिया, “कुछ लोग
यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, कुछ एलिय्याह,
कुछ यिर्मयाह या नबियों में से कोई एक।”
15 यीशु ने उन से पूछा, “लेकिन तुम मुझे
क्या कहते हो?”
16 शमौन पतरस ने कहा, “आप जीवित
परमेश्वर के बेटे मसीह हैं?”
17 यीशु ने कहा, “हे शमौन, योना के बेटे
तुम आशीषित हो क्योंकि तुमने अपने आप
यह नहीं कहा है, लेकिन मेरे पिता ने जो स्वर्ग
में हैं, यह तुम पर प्रगट किया है। 18 मैं भी तुम
से कहता हूँ कि तुम पतरस हो और इस चट्टान
पर मैं अपना चर्च बनाऊँगा। अधोलोक के
दरवाज़े चर्च को हरा नहीं सकेंगे। 19 मैं तुम्हें
स्वर्ग के राज्य की चाभियाँ दूँगा। जो कुछ
तुम पृथ्वी पर बांधोगे[b] वह स्वर्ग में बन्धेगा[c]।
जो कुछ तुम इस पृथ्वी पर खोलोगे[d] वह इस
दुनिया में हो पाएगा।”
20 तब यीशु ने शिष्यों को चिता कर कहा,
“तुम किसी को मत बताना कि मैं मसीह हूँ”
21 उसी समय से यीशु अपने शिष्यों को बताने
लगे कि यह उनके लिए ज़रूरी है कि वह

[a] **16.4** चिन्ह [b] **16.19** रोकोगे [c] **16.19** रोका जाएगा [d] **16.19** इज़ाज़त दोगे

यरुशलेम को जाएँ और प्राचीनों, महायाजकों
और धर्म शिक्षकों के हाथ से बहुत दुख उठा
कर मार डाले जाएँ और तीसरे दिन जी उठें।”
22 यह सुन कर पतरस यीशु को अलग ले
जाकर यह कहते हुए गुस्सा करने लगा, “हे
प्रभु, परमेश्वर न करे कि आपके साथ कभी
ऐसा हो।”
23 यीशु ने तुरन्त पतरस की ओर फिर कर
उस से कहा, “हे शैतान, मेरे सामने से दूर
चले जाओ। तुम मेरे लिए ठोकर का कारण
हो, क्योंकि तुम परमेश्वर की बातों पर नहीं,
लेकिन इन्सानों की बातों पर मन लगाते हो।”
24 तब यीशु ने तो अपने शिष्यों से कहा,
“अगर कोई मुझे अपनाना चाहता है, तो उसे
अपने आप से इन्कार करके और अपने क्रूस
को उठा कर जो मैं कहूँ वही करना पड़ेगा।
25 जो कोई अपने जीवन को बचाना चाहेगा
वह उसे खो देगा। जो मुझ पर विश्वास
करने की खातिर अपने जीवन से हाथ धो
बैठेगा, वही उसे हमेशा के लिए बचा पाएगा।
26 क्योंकि मनुष्य को क्या फ़ायदा अगर
वह पूरी दुनिया को हासिल कर ले, लेकिन
अपनी आत्मा ही को खो दे? या वह अपनी
आत्मा के बदले में क्या देगा? 27 क्योंकि
मनुष्य का पुत्र, यीशु अपने स्वर्गदूतों के साथ
आएगा, और तब हर इन्सान को उसके कामों
के मुताबिक मजदूरी मिलेगी। 28 मैं तुम से
यकीनन कहता हूँ, कि यहाँ पर कुछ ऐसे
लोग खड़े हैं कि जब तक वे मनुष्य के पुत्र
को उसके राज्य में आते न देख लें, मौत का
स्वाद नहीं चखेंगे।”

17 छः दिनों के बाद यीशु पतरस,
याकूब और उसके भाई यूहन्ना को
एक ऊँचे पहाड़ पर ले गए। 2 उनकी मौजूदगी
ही में उनका रंग-रूप बदल गया। उनका
चेहरा सूरज की तरह और कपड़े रोशनी की
तरह सफ़ेद हो गए। 3 अचानक मूसा और
एलिय्याह यीशु से बातचीत करते हुए दिखाई
दिए।
4 तब पतरस ने यीशु को उत्तर दिया, “प्रभु,
हमारे लिए अच्छा है कि हम सब यहीं रहें।
अगर आप इज़ाज़त दें, तो हम तीन तम्बू
बनाएँगे, एक आपके लिए, एक मूसा और
एक एलिय्याह के लिए।”
5 वह बोल ही रहा था कि अचानक एक
उजले बादल की छाया ने आकर उन्हें ढक
लिया। तभी वहाँ एक आवाज़ आयी, “यह
मेरा प्यारा बेटा है, जिस से मैं खुश हूँ, उसी
की सुनो।”
6 जब शिष्यों ने यह सुना तो वे डर के मारे
मुँह के बल गिर पड़े। 7 यीशु ने आकर उन्हें
छूते हुए कहा, “उठो और डरो मत।”
8 जब उन्होंने अपनी आँखें खोलीं तो यीशु
के अलावा और किसी को नहीं पाया। 9 जब
वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे, यीशु ने उन्हें

आज्ञा देते हुए कहा, “जब तक मनुष्य का
पुत्र अर्थात् मैं खुद, मरे हुओं में से जी न उठूँ,
किसी को यह दर्शन न बताना।”
10 यीशु के शिष्यों ने पूछा, “तब धार्मिक
शिक्षक यह क्यों सिखाते हैं, कि पहले
एलिय्याह आएगा?”
11 यीशु ने जवाब में कहा, “इस में कोई
शक नहीं कि एलिय्याह आकर सभी बातों
को ठीक करेगा। 12 मैं तुम्हें बताता हूँ
कि एलिय्याह आ चुका है लेकिन उन्होंने
उसे पहचाना ही नहीं। उन्होंने उसके साथ
मनमाना बर्ताव किया। इसी तरह से मनुष्य
का पुत्र उनके हाथों दुख उठाएगा।”
13 तब शिष्य समझ गए कि यीशु यूहन्ना
बपतिस्मा देने वाले के बारे में कह रहे थे।
14 जब वे सभी भीड़ के पास पहुँचे, एक
आदमी ने आकर, घुटने टेकते हुए कहा,
“प्रभु, मेरे बेटे पर दया कीजिए। 15 वह
मानसिक रोगी है और बड़ी पीड़ा में है। वह
कभी पानी में और कभी आग में गिर पड़ता
है। 16 मैं आपके शिष्यों के पास उसे लाया
था, लेकिन वे उसे ठीक नहीं कर पाए।”
17 तब यीशु ने जवाब दिया, “अविश्वासी
और दुष्ट पीढ़ी, मैं तुम्हारे साथ कब तक
रहूँगा? तुम्हारी कब तक सहूँगा? उसे मेरे
पास ले आओ।”
18 तब यीशु ने गंदी आत्मा को डाँटा और
वह उसमें से निकल गयी। उसी समय से वह
बच्चा ठीक हो गया।
19 फिर अकेले में शिष्य यीशु के पास आए
और पूछा, “हम उस आत्मा को क्यों नहीं
निकाल पाए?”
20 यीशु ने उन से कहा, “तुम्हारे अविश्वास
की वजह से। मैं तुम से सच कहता हूँ कि
अगर तुम्हारे पास सरसों के बीज के बराबर
विश्वास है तो तुम इस पहाड़ से कहोगे,
“यहाँ से वहाँ चले जाओ तो ऐसा हो जाएगा।
तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव नहीं होगा।
21 फिर भी इस तरह की आत्मा बिना उपवास
और प्रार्थना के नहीं निकलती है।”
22 जब वे गलील ही में थे यीशु ने उन से
कहा, “मनुष्य के पुत्र को लोगों के हाथ
पकड़वाया जाएगा। 23 वे उसे मार डालेंगे
और वह तीसरे दिन ज़िन्दा हो जाएगा।” ये
सुन कर वे गहरी उदासी में डूब गए।
24 जब वे कफ़रनहूम आए तो जो प्रार्थना
भवन का टॅक्स लेते थे, उन्होंने आकर पतरस
से कहा, “क्या तुम्हारे गुरू प्रार्थना भवन का
टॅक्स नहीं देते हैं?” उसने कहा, “हाँ, देते
हैं।”
25 घर में आने के बाद सब से पहले यीशु
ने बोलना शुरू किया, “तुम्हारा क्या ख्याल
है, इस पृथ्वी के राजा टॅक्स किस से लेते
हैं? अपने बच्चों से या विदेशियों से?” पतरस
बोला, “विदेशियों से।”
26 यीशु ने उससे कहा, “तब तो बच्चे बच
गए। 27 लेकिन हम उनके लिए ठोकर का
कारण नहीं ठहरेंगे, झील में बँसी डालो और
पहली पकड़ी हुयी मछली को ले लो। उसका
मुँह खोलते ही तुम्हें एक सिक्का मिलेगा। मेरे
और अपने लिए उसे टॅक्स के रूप में दे
देना।”

18 उस समय शिष्य यह कहते हुए यीशु
के पास आए, “स्वर्ग के राज्य में
सब से बड़ा कौन है?”
2 यीशु ने एक छोटे बच्चे को अपने पास
बुलाकर उनके बीच में खड़ा किया। 3 और
कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि अगर
तुम बदलकर छोटे बच्चों की तरह न बनो,
तो स्वर्ग के राज्य में दाखिल नहीं हो सकते।
4 इसलिए जो कोई इस छोटे बच्चे की तरह

अपने आप को दीन करता है, वही स्वर्ग के
राज्य में सब से बड़ा होगा। 5 और जो ऐसे
किसी छोटे बच्चे को मेरे नाम से अपनाता है,
वह मुझे अपना लेता है। 6 लेकिन जो इन
छोटों में से मुझ पर विश्वास करने वाले
किसी एक को चोट पहुँचाए,[a] उसके लिए
भला यह होगा कि एक चक्की का पत्थर
उसकी गर्दन में बान्ध कर उसे समुद्र की
गहराई में डाल दिया जाए।
7 ठोकरों के कारण दुनिया पर हाय! ठोकरें
तो लगेंगी, लेकिन उस व्यक्ति पर हाय, जिस
के ज़रिए ठोकर लगती है। 8 इसलिए अगर
तुम्हारा हाथ या पैर तुम्हें ठोकर पहुँचाए, तो
काट कर अपने से दूर फेंक देना। बेहतर यह
है कि तुम लँगड़े या अपंग स्वर्ग में प्रवेश
करो, बजाए यह कि दो हाथों और दो पैरों
के रहते हमेशा के लिए आग में डाले जाओ।
9 अगर तुम्हारी आँख तुम्हें ठोकर खिलाए तो
इसे निकाल कर अपने से दूर फेंक देना। यह
अच्छा है अन्धे होकर तुम जीवन में प्रवेश
करो बजाए, इसके कि तुम दो आँखों के साथ
नरक की आग में डाले जाओ।
10 ध्यान रखना कि इन छोटों में से किसी
को नीचा न समझना। मैं तुम से कहता हूँ कि
स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत सदा मेरे पिता की
उपस्थिति में रहते हैं। 11 जो मुक्ति पाए हुए
नहीं हैं उन्हें बचाने मैं आया हूँ।
12 तुम्हारा क्या ख्याल है? अगर एक
आदमी के पास सौ भेड़ें हैं उन में से एक
भटक जाती है, तो क्या वह निन्यानवे को
छोड़कर खोयी हुयी एक भेड़ को ढूँढने
पहाड़ों पर नहीं जाता है? 13 और जब उसे
पा लेता है, मैं सच कहता हूँ कि वह खोयी
हुयी भेड़ के लिए इतना खुश होता है जितना
निन्यानवे के लिए नहीं होता है। 14 इसी तरह
से यह तुम्हारे स्वर्ग में रहने वाले पिता की
इच्छा नहीं है कि इन में से कोई भी छोटा
खोने पाए।
15 इसके बजाए अगर तुम्हारा भाई या बहन
तुम्हारे खिलाफ़ बुरा करता है, तो अकेले
में जाकर उसको उसकी गलती बतलाओ।
16 अगर वह तुम्हारी सुने तो तुमने उस को
वापस पा लिया। अगर वह नहीं सुनता है तो
एक-दो को भी अपने साथ ले जाओ। तब
दो या तीन गवाहों के मुँह से हर बात का
फ़ैसला किया जाएगा। 17 अगर वह चर्च की
भी न सुने, तो उसे टॅक्स जमा करने वाला
और मूर्तिपूजक ही समझो।
18 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कुछ तुम
इस पृथ्वी पर बाँधोगे[b] वह स्वर्ग में बन्धेगा।
जो कुछ तुम इस पृथ्वी पर खोलोगे वह स्वर्ग
में खुलेगा।
19 मैं फिर तुम से कहता हूँ कि अगर किसी
विषय पर तुम में से दो जन एक मन होकर
माँगें, तो स्वर्ग में रहने वाले मेरे पिता के द्वारा
वह मिल जाएगा। 20 क्योंकि जहाँ कहीं मेरे
नाम से दो या तीन लोग इकट्ठे होते हैं, वहाँ
उनके बीच मैं हूँ।"
21 तब पतरस ने आकर कहा, "प्रभु, मेरे
भाई या बहन के कितनी बार मेरे खिलाफ़
बुरा करने पर मैं उसे माफ़ करूँ? क्या सात
बार?"
22 यीशु ने उससे कहा, "मैं यह नहीं कहता
कि सिर्फ़ सात बार, लेकिन सात के सत्तर
गुना।
23 इसलिए स्वर्ग के राज्य की तुलना एक
राजा से की जा सकती है, 24 जब वह अपने
नौकरों के साथ अपने हिसाब किताब को
करने लगा, तो एक ऐसे व्यक्ति को उसके
पास लाया गया जो दस हज़ार सिक्कों का

[a] **18.6** उसके जीवन में रुकावट का कारण बने 2रोकेगा [b] **18.18** रुकेगा

कर्ज़दार था। 25 लेकिन क्योंकि वह कर्ज़ अदा नहीं कर सकता था, उसके मालिक ने हुक्म दिया कि उसे, उसकी पत्नी और उसके बच्चों को बेच कर कर्ज़ अदा किया जाए।
26 इसलिए नौकर ने गिर कर प्रणाम करते हुए कहा, "मालिक थोड़ा धीरज रखें। मैं सब कुछ चुका दूँगा।" 27 तब उस नौकरके मालिक को तरस आया और उसने उसे जाने दिया। उसने कर्ज़ भी माफ़ कर दिया।
28 उस नौकरके बाहर निकलने पर उसे साथी सेवक मिला, जिसे उसको चाँदी के सौ सिक्के देने थे। 29 उसने उसका गला पकड़ते हुए कहा, "जो कुछ तुझे मुझ को देना है, वह मुझे जल्दी दे।" वह नौकर उसके पैरों पर गिरते हुए बोला, "थोड़ा धीरज रखो, मैं सब वापस कर दूँगा।" 30 उसने न मानी, लेकिन जब तक वह पैसा वापस न कर दे, उसे जेल की सज़ा दिलवा दी।
31 जब उसके संगी साथियों ने देखा कि क्या किया गया है, तो जाकर उसके मालिक को उस नौकर की करतूत बता दी। 32 तब उसके मालिक ने उसको बुलाकर कहा, "हे दुष्ट आदमी, मैंने तुम्हारे कहने पर तुम्हारा सारा कर्ज़ माफ़ किया था। 33 जैसे मैंने तुम पर दया की थी, क्या तुम्हें उस पर नहीं करनी चाहिए थी?" 34 उसके मालिक ने बड़े गुस्से से उसे सताने वालों के सुपुर्द कर दिया, ताकि जब तक वह सब कुछ चुका न दे, वहीं रहे।
35 अगर तुम में से हर एक अपने मन से अपने उस भाई-बहन को माफ़ न करेगा, जिस ने तुम को दुख पहुँचाया है, तो मेरे स्वर्गिक पिता भी तुम से ऐसा ही बर्ताव करेंगे।

19 यीशु ये बातें कहने के बाद गलील से चल पड़े। वहाँ से वह यरदन के पार यहूदिया के इलाके में आए। 2 एक बड़ी भीड़ उनके पीछे चल पड़ी और उन्होंने वहाँ पर उनको स्वस्थ किया। 3 फ़रीसी भी यीशु को परखने के लिए आकर कहने लगे, "क्या यह एक इन्सान के लिए जायज़ है कि वह अपनी पत्नी को किसी भी मुद्दे पर तलाक दे दे?"
4 यीशु ने जवाब में उन से कहा, "क्या तुमने यह नहीं पढ़ा कि जैसे परमेश्वर ने उन्हें शुरूआत में पति-पत्नी करके ठहराया, यह भी कहा, 5 'इस वजह से पुरुष अपने पिता और माता को छोड़ कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और दोनों एक देह होंगे?' 6 इसलिए वे दोनों दो नहीं लेकिन एक देह होंगे। इस कारण जिन्हें परमेश्वर ने जोड़ा है उन्हें कोई अलग न करे।"
7 उन्होंने यीशु से कहा, "फिर मूसा ने यह आज्ञा क्यों दी कि तलाकनामा देकर अलग हो जाए?"
8 यीशु ने उन से कहा, "तुम्हारे कठोर और हठीले मन की वजह से मूसा ने तुम्हें तलाक देने की अनुमति दी थी। लेकिन शुरूआत से ऐसा नहीं था। 9 मैं कहता हूँ जो कोई यौन अनैतिकता[a] के अलावा किसी और वजह से अपनी पत्नी को तलाक दे और किसी और से विवाह कर ले, वह व्यभिचार करता है। जो कोई त्यागी हुयी स्त्री से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है।"
10 यीशु के शिष्यों ने उससे कहा, "अगर ऐसा है तो विवाह करना बेकार है।"
11 लेकिन यीशु ने उन लोगों से कहा, "सभी लोग अविवाहित नहीं रह सकते, सिर्फ़ वे जिन्हें यह दान दिया गया है। 12 कुछ पैदाईशी नपुंसक हैं। कुछ को लोगों ने नपुंसक बनाया है। कुछ लोगों ने परमेश्वर के राज्य के

[a] **19.9** व्यभिचार

लिए अपने आप को नपुंसक बनाया है। जो
व्यक्ति इस स्थिति को अपना सकता है,
वह अपना ले।”
13 तब यीशु के पास छोटे बच्चों को लाया
गया, ताकि यीशु उनके ऊपर अपने हाथों को
रख कर प्रार्थना करें। लेकिन शिष्यों ने उन
लोगों को डाँटा।
14 यीशु ने कहा, “छोटे बच्चों को मेरे
पास आने दो। उन्हें मना मत करो, क्योंकि
परमेश्वर का राज्य बच्चों का सा स्वभाव
रखने वाले लोगों का ही है।”
15 यीशु ने अपने हाथ उन पर रखे और वहाँ
से चल दिए।
16 अचानक ही वहाँ एक आदमी आकर
कहने लगा, “अच्छे गुरू, अनन्त जीवन पाने
के लिए मैं कौन सा अच्छा काम करूँ?”
17 यीशु ने उस से कहा, “तुम मुझे अच्छा
क्यों कह रहे हो? परमेश्वर को छोड़कर कोई
भी अच्छा नहीं है। लेकिन अगर तुम जीवन
पाना चाहते हो, तो हुक्म मानो।”
18 उसने कहा, “कौन सा हुक्म?” यीशु ने
कहा, “तुम हत्या मत करना, अवैध यौन
रिश्ता मत रखना, चुराना नहीं। झूठी गवाही
मत देना। 19 अपने माता-पिता की इज़्ज़त
करना और जितना प्यार खुद से करते हो,
उतना ही दूसरों से करना।”
20 नवजवान व्यक्ति ने यीशु से कहा, “ये
सब तो मैं बचपन से करता आ रहा हूँ। अब
मेरे में क्या कमी है?”
21 यीशु ने उस से कहा, “अगर सिद्ध बनना
चाहते हो, तो जाओ, जो कुछ तुम्हारे पास है
वह गरीबों को दे दो। मेरे शिष्य बन जाओ
और तुम्हें स्वर्ग में दौलत मिलेगी।”
22 यह बात सुन कर वह नवजवान उदास
होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत अमीर
था।”
23 तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “मैं
तुम से सच कहता हूँ, कि एक अमीर इन्सान
के लिए स्वर्ग के राज्य में दाखिल होना
मुश्किल है। 24 मैं फिर तुम से कहता हूँ,
एक सुई के छेद में ऊँट का पार हो जाना
आसान है, लेकिन एक अमीर इन्सान के
लिए परमेश्वर के राज्य में दाखिल हो पाना
मुश्किल है।”
25 जब यीशु के शिष्यों ने यह बात सुनी, तो
वे आश्चर्य से भर कर कहने लगे, “तो मुक्ति
कौन पा सकता है?”
26 तब यीशु ने उनकी तरफ़ देख कर उन
से कहा, “इन्सान से तो यह नहीं हो सकता,
लेकिन परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।”
27 तब पतरस ने जवाब दिया, “देखिए
आपके पीछे चलने के लिए हम ने अपना
सब कुछ छोड़ दिया है, इसलिए हमें क्या
मिलेगा?”
28 और यीशु ने उन लोगों से कहा, “मैं तुम
से सच-सच कहता हूँ, तुम जितनों ने मेरी मान
ली है नयी शुरूआत[a] के समय जब परमेश्वर
का पुत्र अपनी महिमा से राजासन पर बैठ
कर इस्राएल के बारह गोत्रों का इन्साफ़
करेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे आए हो, तुम
भी बाहर राजासनों पर बैठ कर इस्राएल के
बारह गोत्रों का न्याय करोगे। 29 हर एक वह
जन जिस ने घरों, भाईयों बहनों, पिता, माता,
पत्नी, बच्चों, या जायदाद को मेरी खातिर
छोड़ दिया है, सौ गुना प्रतिफल पाने के साथ
ही हमेशा की ज़िन्दगी पाएगा। 30 परन्तु कई

[a] **19.28** सृष्टि

जो पहले हैं वे पिछले हो जाएँगे और जो
पिछले हैं वे पहले हो जाएँगे।”

20 क्योंकि स्वर्ग का राज्य एक ऐसे
गृहस्थ की तरह है जो बहुत सवेरे
उठ कर अपने अंगूर के बगीचे में काम करने
के लिए मजदूर ढूँढने निकला। 2 उनके साथ
एक चाँदी के सिक्के[a] की दिन भर की मजदूरी
तय होने के बाद, उसने उन्हें काम पर लगा
दिया। 3 जब वह सुबह नौ बजे बाहर गया,
तो तमाम मजदूरों को बाज़ार में फ़ालतू खड़े
हुए देखा और उन से भी कहा, 4 “तुम भी
अंगूर के बगीचे में काम करने जाओ और
मैं तुम्हें वाजिब मजदूरी दूँगा।” और उन्होंने
ऐसा किया भी।
5 दोपहर और तीसरे पहर जाकर उसने फिर
वैसा ही किया। 6 शाम पाँच बजे फिर दूसरों
को फ़ालतू खड़े देखा और पूछा, “तुम पूरे
दिन यहाँ ऐसे ही क्यों खड़े हो? “उन्होंने
उससे कहा, “किसी ने भी हमें काम नहीं
दिया।” 7 उसने उन से कहा, “तुम भी जाकर
अंगूर के बगीचे में काम करो और तुम्हें
मजदूरी दी जाएगी।”
8 शाम होने पर बगीचे के मालिक ने अपने
मॅनेजर से कहा, “शुरू से आखिर तक आने
वाले मजदूरों को बुलाकर मजदूरी दे डालो।”
9 जिन लोगों को पाँच बजे काम पर लगाया
था, चाँदी का एक सिक्का[b] दिया गया। 10 जब
वे लोग सामने आए जिन्हें सुबह से काम पर
लगाया गया था, 11 तो उन्हें भी चाँदी का एक
सिक्का दिया गया, जब कि वे ज़्यादा मिलने
की आशा लगाए हुए थे। 12 मजदूरी मिलते
ही वे मालिक की शिकायत यह कह कर
करने लगे, “जिन लोगों ने एक घण्टा ही काम
किया, उन्हें भी वही मजदूरी दी गयी है, जो
हम सभी को धूप में भारी काम करने पर
मिली है।”
13 लेकिन उसने उत्तर दिया, “दोस्त, मैं
तुम्हारे साथ कोई अन्याय नहीं कर रहा
हूँ। क्या तुमने ही एक चाँदी के सिक्के[c] में
काम करना कबूल नहीं किया था? 14 अपना
हिस्सा लो और चल पड़ो। यह मेरी मर्ज़ी है
कि मैंने उन्हें भी उतना ही दिया है, जितना
तुम्हें दिया है। 15 क्या यह वाजिब नहीं कि मैं
अपने पैसे से जो चाहूँ वह करूँ? क्या तुम्हें
जलन हो रही है कि मैं उदार मन का हूँ?
16 इसलिए जो पहले आए हैं वे ऊँचा पद
नहीं पाएँगे, और जिन को कोई पूछता भी
नहीं वे श्रेष्ठ होंगे।
17 यरूशलेम जाते समय यीशु मसीह ने
अपने बारहों शिष्यों को अलग ले जाकर उन
से कहा, 18 “देखो, हम लोग यरूशलेम जा
रहे हैं। मनुष्य का पुत्र प्रधान पुरोहितों और
शिक्षकों के हाथ पकड़वाया जाएगा। वे लोग
उसे मार डालेंगे। 19 उसकी हँसी उड़ाए जाने
के लिए गैरयहूदियों के हाथ सुपुर्द किए जाने
के साथ कोड़े लगाएँगे और क्रूस पर चढ़ा
देंगे। वह तीसरे दिन ज़िन्दा हो जाएगा।
20 तब ज़ब्दी के बच्चों की माँ अपने बेटों
के साथ यीशु के कदमों पर गिर कर कुछ
माँगने लगी। 21 यीशु ने उससे पूछा, “तुम्हें
क्या चाहिए?” उसने उन से कहा, “कुछ ऐसा
कीजिए कि आकाशी[d] राज्य में मेरे दोनों बेटों
में से एक आपके बाएँ हाथ और दूसरा दाएँ
हाथ पर बैठे।”
22 लेकिन यीशु ने जवाब में कहा, “तुम्हें
मालूम नहीं कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम
वह प्याला पी सकते हो, जो मैं पीने जा रहा
हूँ और उस बपतिस्मे को लोगे जो मैं लेने पर
हूँ?” उन्होंने कहा, “हम कर सकते हैं।”

[a] **20.2** एक दीनार [b] **20.9** एक दीनार [c] **20.13** एक दीनार [d] **20.21** स्वर्गिक

23 यीशु ने उन से कहा, “तुम सचमुच में
मेरा प्याला पीओगे और मैं जिस बपतिस्मे
को लेने पर हूँ, उसे लोगे, लेकिन मेरे दाहिने
हाथ और बाएँ हाथ पर बैठाने का काम मेरा
नहीं है, लेकिन यह उनको मिलेगा, जिन को
मेरे पिता ने तैयार किया है।”
24 जब बाकी दस ने यह सब सुना तो उन
दोनों भाईयों से नाराज़ होने लगे। 25 लेकिन
यीशु ने उन्हें बुलाकर कहा, “तुम्हें मालूम है
कि गैरयहूदियों में प्रधान लोग दूसरों के ऊपर
शासन करते हैं और जो महान हैं वे दूसरों के
ऊपर अधिकार जताते हैं। 26 लेकिन तुम्हारे
बीच ऐसा नहीं होना चाहिए। तुम में से जो
बड़ा बनना चाहता है, उसे दूसरों का सेवक
बनना चाहिए। 27 जो सब से आगे का या
ऊँचा पद चाहते हैं, उन्हें दूसरों का गुलाम[a]
बनना चाहिए। 28 उसी तरह से मनुष्य का पुत्र
सेवा लेने के बजाए सेवा करने आया और
अपना जीवन बहुत से लोगों के बदले में देने
के लिए आया।
29 जैसे ही वे यरीहो से निकल रहे थे, यीशु
के साथ एक बड़ी भीड़ हो लीं। 30 अचानक
ही दो व्यक्तियों ने जिन्हें आँखों से बिल्कुल
नहीं दिखता था और रास्ते के किनारे बैठे हुए
थे, सुना कि यीशु वहाँ से गुज़र रहे हैं। सुनते
ही वे चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगे, “हे दाऊद
के बेटे, हम पर दया कीजिए।”
31 भीड़ ने उन्हें चिल्लाने को मना किया,
लेकिन उन्होंने और ज़ोरों से चिल्ला-चिल्ला कर
कहा, “हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया
कीजिए।”
32 यीशु वहीं खड़े हो गए और उन से पूछा,
“तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए
करूँ?”
33 उन्होंने उन से कहा, “स्वामी, यही कि
हम देखने लगें।’
34 यीशु ने तरस खा कर उनकी आँखें छू
लीं और तुरन्त उनकी आँखें खुल गयीं। उसी
समय से वे यीशु को मानने लगे।

21 जब वे यरूशलेम के पास बैतफ़गे
के पास जैतून पहाड़ पर पहुँचे, तब
यीशु ने अपने दो शिष्यों को यह कहते हुए
भेजा, 2 “अपने सामने के गाँव में जाते ही,
तुम एक गदही को उसके बच्चे के साथ
बँधी पाओगे। उन्हें खोलकर यहाँ ले आओ।
3 अगर कोई तुम से कुछ कहे, तो तुम कहना
कि यीशु को इसकी ज़रूरत है। तब वह तुम्हें
खोलकर तुरन्त ले जाने देगा।”
4 यह सब इसीलिए हुआ ताकि
भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही हुयी वह बात
पूरी हो, कि 5 “सिय्योन के लोगों से कहो,
देखो, तुम्हारा राजा तुम्हारे पास आ रहा है।
वह नम्र है और गदहे पर बैठा हुआ है।”
6 शिष्यों ने जाकर वही किया जिसे करने
का हुक्म यीशु ने दिया था। 7 गदहे और उसके
बच्चे को लाकर कुछ ने उनके ऊपर अपने
कपड़े डाल दिए और यीशु को उस पर बैठा
दिया। 8 कुछ ने पेड़ों की डालियों को तोड़
कर सड़क पर डाल दिया। एक बड़ी भीड़ ने
सड़क पर अपने कपड़े बिछाए। 9 भीड़ जो
यीशु के आगे और पीछे थी, चिल्ला-चिल्ला कर
कह रही थी, “दाऊद के बेटे को होसन्ना! जो
प्रभु के नाम से आता है वह आशीषित है।”
10 जब वह यरूशलेम आए, सारा शहर
जोश में पूछ रहा था, “यह कौन है?”
11 भीड़ ने कहा, “यह गलील के नासरत के
भविष्यद्वक्ता यीशु हैं।”

[a] **20.27** दास

12 तब यीशु परमेश्वर के भवन में गए और
जो लोग वहाँ खरीदना-बेचना कर रहे थे,
उनकी मेज़ों को पलट दिया और कबूतर
बेचने वालों की कुर्सी फेंक दी। 13 यीशु ने
उन से कहा, यह लिखा है, "मेरा घर प्रार्थना
का घर कहलाएगा, लेकिन तुमने इसे चोरों
का अड्डा बना दिया है।"
14 आँखों से लाचार और पैरों से अपंग लोग
भी प्रार्थना भवन में उनके पास आए और
यीशु ने उन्हें ठीक कर दिया। 15 जब प्रधान
पुरोहित और शिक्षकों ने यीशु के अजीब[a]
कामों को देखा और प्रार्थना भवन में बच्चों को
चिल्लाते, "दाऊद की सन्तान को होसान्ना"
सुना, तो बड़े नाराज़ हुए। उन्होंने कहा, "क्या
तुम यह सुन रहे हो कि ये क्या कह रहे हैं?"
16 यीशु ने उन से कहा, "हाँ! क्या तुमने कभी
नहीं पढ़ा कि छोटे बच्चों के मुँह से और दूध
पीते बच्चों के मुँह से उन्होंने अपनी तारीफ़
करवायी।"
17 तब वह उन्हें छोड़कर शहर से बाहर
बैतनिय्याह को गये, और उन्होंने वहीं रात
गुज़ारी। 18 सुबह जब वह शहर लौटे तो उन्हें
बड़ी भूख लगी। 19 रास्ते में जब उन्होंने एक
अंजीर के पेड़ को देखा, तो उसके पास गए।
लेकिन पत्तियों को छोड़कर उसमें कुछ नहीं
पाने पर उससे कहा, "आज से तुम में कभी
भी फल न निकले। तुरन्त अंजीर का पेड़ सूख
गया।"
20 शिष्यों ने जब यह देखा तो आश्चर्य से
कहा, "अरे अंजीर का पेड़ कितनी जल्दी
सूख गया।"
21 यीशु ने जवाब में उन से कहा, "मैं तुम से
सच कहता हूँ, अगर तुम्हारे पास विश्वास है,
और शक नहीं है, तो तुम सिर्फ़ यही न करोगे
जो इस अंजीर के पेड़ के साथ किया गया
है, लेकिन इस पहाड़ से कहोगे, 'उखड़ कर
समुद्र में जा गिरो' तो ऐसा हो जाएगा। 22 जो
कुछ तुम बिना शक किए हुए दुआ में माँगोगे,
वह सब तुम्हें मिलेगा।"
23 जब यीशु प्रार्थना भवन में आकर सिखा
रहे थे, तो प्रधान पुरोहित और लोगों के
अगुवों ने आकर कहा, "तुम ये काम किस
के अधिकार से करते हो?" और
24 यीशु ने जवाब में कहा, "तुम मुझे जवाब
दो तो मैं भी तुम्हें बता सकूँगा कि किस के
अधिकार से मैं ये काम करता हूँ। 25 यूहन्ना
का बपतिस्मा किसकी तरफ़ से था? स्वर्ग
के आदेश से या इन्सानों की तरफ़ से?" वे
लोग आपस में ही बहस करने लगे, "अगर
हम कहें, 'स्वर्ग से', तो वह हमसे कहेंगे,
'तो तुमने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?
26 लेकिन अगर हम कहें, 'मनुष्यों की तरफ़
से, तो हमें लोगों का डर है, क्योंकि हर एक
जन यूहन्ना को नबी समझता था।" 27 उन
लोगों ने यीशु को यह जवाब दिया, हमें नहीं
मालूम।" तब यीशु ने उन से कहा, "तो मैं
भी तुम्हें यह नहीं बताता कि मैं किस के
अधिकार से यह सब काम करता हूँ। 28 एक
आदमी के दो बेटे थे। वह उन में से एक के
पास गया और कहा, 'बेटे, आज जाकर मेरे
अंगूर के बगीचे में काम कर लो।' 29 उसने
जवाब दिया, "मैं नहीं करता, " बाद में उसका
मन बदल गया और काम करने गया भी।
30 जब दूसरे बेटे के पास जाकर उसने वही
बात कही, तो उसका जवाब था, 'श्रीमान
जी, अभी जाता हूँ" लेकिन उसने वैसा किया
नहीं। 31 अब तुम ही बताओ कि इन दोनों में
से किस ने अपने पिता की बात मानी? उन
लोगों ने कहा, 'पहले ने।' यीशु ने उन लोगों से
कहा, "मैं तुम से यकीनन कहता हूँ कि टॅक्स

[a] **21.15** अजीब

जमा करने वाले और यौन व्यापार में लगी
महिलाएँ तुम से पहले परमेश्वर के राज्य में
दाखिला पाएँगे। 32 क्योंकि तुम्हें सच्चाई के
पथ को दिखाने के लिए यूहन्ना आया था,
लेकिन तुमने उस पर विश्वास नहीं किया।
लेकिन टॅक्स लेने वालों और वेश्याओं ने उस
पर भरोसा रखा लेकिन तुम यह देख कर पीछे
भी न पछताए कि उस पर विश्वास कर लेते।
33 एक और दृष्टान्त सुनोः एक व्यक्ति था,
जिस ने दाख की बारी लगाई और उसके
चारों ओर बाड़ा बान्धा। उसने उसमें रस
का कुंड खोदा और गुम्मट भी बनाया, और
किसानों को उसका ठेका देकर वह खुद
विदेश चला गया। 34 जब फल का मौसम
नज़दीक आया, तो उसने अपने नौकरों को
उसका फल लेने के लिए किसानों के पास
भेजा। 35 परन्तु किसानों ने उसके नौकरों को
पकड़ कर किसी को पीटा, और किसी को
मार डाला, और किसी को पत्थर मारे।
36 फिर उसने दूसरे नौकरों को भेजा जो
पहलों से अधिक थे, और उन्होंने उनके साथ
भी वही किया।
37 अन्त में उसने अपने बेटे को उनके पास
यह सोच कर भेजा कि वे मेरे बेटे का सम्मान
करेंगे।
38 परन्तु किसानों ने जब पुत्र को देखा, तो
आपस में कहने लगे, 'यह तो उत्तराधिकारी
है। आओ, उसे मार डालें और उसकी
विरासत हमें मिल जाएगी।' 39 और उन्होंने
उसे पकड़ा और अंगूर के बगीचे के बाहर
निकाल कर मार डाला।
40 सो जब अंगूर के बगीचे का मालिक
आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या
करेगा?"
41 उन्होंने उन से कहा, "वह उन बुरे लोगों
को बुरी रीति से नाश करेगा और अंगूर के
बगीचे का ठेका अन्य किसानों को देगा जो
समय पर उसे फल दिया करेंगे।" 42 यीशु ने
उन से कहा, "क्या तुमने कभी पवित्र शास्त्र
में नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजमिस्रियों
ने किसी काम का नहीं जाना था, वही कोने
के सिरे का पत्थर हो गया? 43 यह प्रभु की
ओर से हुआ, और हमारे देखने में अजीब है।
इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर
का राज्य तुम से छीन लिया जाएगा और
ऐसे लोगों को दे दिया जाएगा, जो उसका
फल लाएँगे। 44 जो इस पत्थर पर गिरेगा
वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर वह
पत्थर गिरेगा उसको पीस डालेगा।"
45 मुख्य पुरोहित और फ़रीसी उनके
दृष्टान्तों को सुन कर समझ गए कि वह हमारे
विषय में बोल रहे हैं। 46 और वे उन्हें कैद
करना चाहते थे, परन्तु उन्हें लोगों का डर
था क्योंकि वे यीशु को भविष्यद्वक्ता मानते
थे।

22 लोगों को उदाहरण या दृष्टान्त देते
हुए यीशु ने फिर से कहा, 2 "स्वर्ग
का राज्य एक ऐसे राजा की तरह है जिस
ने अपने बेटे की शादी का इन्तज़ाम किया।
3 उसने अपने नौकरों को उन लोगों के पास
भेजा जिन्हें नेवता दिया गया था, लेकिन उन
में से कोई नहीं आया।
4 उसने एक बार फिर अपने नौकरों को यह
कहला भेजा, 'नेवते में बुलाए लोगों से कहना
कि मैंने खाना तैयार किया है, सारी तैयारियाँ
हो चुकी हैं, दावत में आ जाओ।'
5 लेकिन लोगों ने ध्यान नहीं दिया और
इधर-उधर चल दिए। एक अपने खेत में,
दूसरा अपने काम पर। 6 बाकी लोगों ने उसके
नौकरों को पकड़ कर उनके साथ बुरा बर्ताव
किया और उन्हें मार भी डाला।

7 जब राजा को यह बात मालूम पड़ी,
तो उसे बहुत गुस्सा आया। 8 उसने अपनी
फ़ौज को भेज कर हत्यारों को नाश किया
और शहर को जला डाला। तब उसने अपने
नौकरों से कहा, 'खाना तैयार है, लेकिन
जिन्हें बुलाया गया था, वे लायक नहीं थे।
9 इसलिए सड़कों के चौराहों पर जिस किसी
को पाते हो, उसे शादी में न्योता दो'।
10 इसलिए वे नौकर सड़कों पर गए और
जिस बुरे या अच्छे इन्सान को पाया, उसे ले
आए। इस तरह से शादी का कमरा मेहमानों
से भर गया। 11 जब राजा मेहमानों से मिलने
आया, तो उसने एक ऐसे इन्सान को वहाँ
पाया जो दावत के कपड़े नहीं पहने था।
12 उसने उस से कहा, "दोस्त, तुम यहाँ बिना
अच्छे कपड़े पहने कैसे आ गए?" वह कुछ
भी बोल नहीं पाया, 13 तब राजा ने नौकरों से
कहा, 'इसके हाथ पैर बान्ध कर ले जाओ
और अँधेरे में डाल दो। वहाँ रोना और दाँतों
का पीसना होगा।'
14 सभी लोगों को नेवता तो दिया गया है
लेकिन सभी नेवते में आने की शर्त को मंजूर
नहीं करते हैं।"
15 तब फ़रीसियों ने जाकर आपस में विचार
किया, कि उन्हें किस प्रकार बातों में फसाएँ।
16 सो उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के
साथ यीशु के पास यह कहने को भेजा, कि
हे गुरू, हम जानते हैं, कि आप सच्चे हैं, और
परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाते है, और
किसी की परवाह नहीं करते, क्योंकि आप
मनुष्यों का मुँह देख कर बातें नहीं करते।
17 इसलिये हमें बताइए कि आप क्या समझते
हैं? कैसर को कर देना उचित है, या नहीं।"
18 यीशु ने उनकी दुष्टता जान कर कहा, "हे
कपटियो, मुझे क्यों परखते हो? 19 कर का
सिक्का मुझे दिखाओ।" तब वे उनके पास एक
दीनार ले आए। 20 यीशु ने उन लोगों से पूछा,
"यह मूर्ति और नाम किस का है?" उन्होंने
कहा, "कैसर का।"
21 यीशु ने कहा, "जो कैसर का है, वह
कैसर को, और जो परमेश्वर का है, वह
परमेश्वर को दो।"
22 यह सुन कर उन्होंने अचम्भा किया और
उन्हें छोड़कर चले गए।
23 उसी दिन सदूकी जो कहते थे कि मरे
हुओं का जी उठना है ही नहीं, उनके पास
आए, और उन्होंने यीशु से पूछा, 24 "हे गुरू,
मूसा ने कहा था, कि यदि कोई बिना सन्तान
मर जाए, तो उस का भाई उसकी पत्नी को
ब्याह करके अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न
करे। 25 अब हमारे यहाँ सात भाई थे; पहला
ब्याह करके मर गया, और सन्तान न होने के
कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिये
छोड़ गया। 26 इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने
भी किया, और सातों तक यही हुआ। 27 सब
के बाद वह महिला भी मर गई। 28 सो जी
उठने पर, वह उन सातों में से किस की पत्नी
होगी?"
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "कि तुम
बाइबल और परमेश्वर की ताकत[a] नहीं
जानते, इस कारण भूल में पड़ गए हो।
30 क्योंकि जी उठने पर ब्याह शादी न होगी
परन्तु वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के समान
होंगे। 31 परन्तु मरे हुओं के जी उठने के
विषय में क्या तुमने यह वचन नहीं पढ़ा, जो
परमेश्वर ने तुम से कहा, 32 'कि मैं अब्राहम
का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर
और याकूब का परमेश्वर हूँ।' वह तो मरे
हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर
है।"

[a] 22.29 सामर्थ

33 यह सुन कर लोग उनके उपदेश से
अचंभित रह गए।
34 जब फ़रीसियों ने सुना, कि यीशु ने
सदूकियों का मुँह बन्द कर दिया, तो वे इकट्ठे
हुए। 35 और उन में से एक व्यवस्थापक ने
यीशु को जाँचने के लिये उन से पूछा, 36 "हे
गुरू, बाइबल में कौन सी आज्ञा बड़ी है?"
37 उन्होंने उस से कहा, "तू परमेश्वर अपने
प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण
और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।
38 बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। 39 और
उसी के समान यह दूसरी आज्ञा भी है, कि तुम
अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो। 40 ये
ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था नियमशास्त्र
और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।"
41 जब फ़रीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने उन
से पूछा, 42 "मसीह के विषय में तुम क्या
समझते हो? वह किस की सन्तान है?"
उन्होंने उस से कहा, "दाऊद की।"
43 यीशु ने उन से पूछा, "तो दाऊद आत्मा
के द्वारा उसे प्रभु क्यों कहता है, 44 कि प्रभु
ने, मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक
कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पैरों के नीचे न कर
दूँ। 45 भला, जब दाऊद उन्हें प्रभु कहता है,
तो वह उसका पुत्र कैसे हुआ?"
46 उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह
सका परन्तु उस दिन से किसी को फिर उन
से कुछ पूछने की हिम्मत न हुयी।

23 तब यीशु भीड़ के साथ और अपने
शिष्यों से बातचीत करने लगे।
उन्होंने कहा, 2 "धर्म शिक्षक और फ़रीसी
मूसा के पद पर विराजमान हैं। 3 इसलिए जो
कुछ मानने के लिए वे कहते हैं, मानो और
करो, लेकिन उन सब बातों को मत करो जो
वे तुम से करने के लिए कहते हैं, लेकिन
खुद करते नहीं हैं। 4 वे उठाया न जा सकने
वाला बोझ, लोगों के कन्धों पर डाल देते
हैं। लेकिन वे ऐसे बोझ को उठाने में अपनी
उँगली से भी मदद नहीं करते हैं।
5 वे लोगों को दिखाने के लिए अपने काम
करते हैं। वे अपने तावीज़ों को बड़ा करते
और अपने चोगों की किनार को चौड़ा करते
हैं। 6 दावतों में ऊँची गद्दी पर बैठना चाहते हैं
और आराधनालय में खास कुर्सी ढूँढते हैं।
7 वे बाज़ार में दूसरों से सलाम चाहते हैं और
शिक्षक कहलवाना माँगते हैं।
8 तुम अपने मन में यह चाह मत रखो कि
कोई तुम्हें शिक्षक कह कर पुकारे, क्योंकि
तुम्हारा एक ही शिक्षक है, वह है मसीह
और तुम एक दूसरे के भाई बहन हो। 9 इस
दुनिया में किसी को मेरे पिता कह कर मत
बुलाना, क्योंकि तुम्हारे एक ही स्वर्गिक पिता
परमेश्वर हैं, जो स्वर्ग में हैं। 10 तुम[a] खुद
स्वामी मत कहलाना, क्योंकि सिर्फ़ मसीह
ही तुम्हारे स्वामी हैं।
11 लेकिन जो तुम में सब से बड़ा है, वह
सब का नौकर बने। 12 जो अपने आप को
बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा। जो
अपने आपको नम्र करेगा वह बड़ा किया
जाएगा।
13 लेकिन हे कपटी शिक्षको और
फ़रीसियो, तुम पर हाय, तुम पाखण्डी हो।
तुम दूसरों के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश के

[a] **23.10** सेवक

लिए रुकावट हो। तुम न ही खुद दाखिल होते हो और न दूसरों को दाखिल होने देते हो।

14 हे कपटी शिक्षको और फ़रीसियो, तुम
लम्बी-लम्बी दिखाने वाली प्रार्थना करके
विधवाओं के घर लूटते हो। इसलिए तुम बड़े
अपराध के दोषी हो।

15 कपटी शिक्षको और फ़रीसियो, तुम
समुद्र और भूमि की यात्रा करके किसी तरह
एक इन्सान को अपने मत में ले आते हो,
लेकिन उसके बाद उसे अपनी तरह नरक की
सन्तान बना देते हो।

16 अन्धे कपटी रास्ता दिखाने वाले, जो
कहते हो, कि इस प्रार्थना भवन की कसम
खाने से कुछ नहीं लेकिन जो इस भवन के
सोने की कसम खाता है, वह अपने शब्द
से बन्ध जाता है। 17 बेवकूफ़ो और अन्धो!
कौन बड़ा है, सोना या मन्दिर जो सोने को
शुद्ध करता है? 18 तुम कहते हो, जो वेदी की
कसम खाता, वह नहीं लेकिन जो इस पर
रखी भेंट की कसम खाता है, वह भी अपने
शब्द से बन्ध जाता है। 19 तुम बेवकूफ़ो और
अन्धो, क्या भेंट बड़ी है या वह वेदी जो
इस पर रखी चीज़ों को पवित्र करती है?
20 इसलिए जो वेदी की कसम खाता है वह
इसकी और इस पर रखी चीज़ों की कसम
खाता है। 21 जो प्रार्थना भवन की कसम
खाता है वह इसकी और इस में रहने वाले
की कसम खाता है। 22 जो स्वर्ग की कसम
खाता है, वह वहाँ के राजासन और उस पर
बैठने वाले की भी कसम खाता है।

23 कपटी शिक्षको और फ़रीसियो, तुम पर
हाय! तुम पोदीने और सौंफ़ और जीरे का
दसवाँ भाग देते हो, लेकिन उससे ज़्यादा
ज़रूरी बातों की अनदेखी करते हो, वे हैं
इन्साफ़[a], दया[b] और विश्वास[c]। दसवाँ भाग
देने के साथ ये बातें भी तुम्हें करनी चाहिए
थीं। 24 अन्धे अगुवो! तुम मच्छर को छानते
हो लेकिन ऊँट को निगल जाते हो।

25 कपटी शिक्षको और फ़रीसियो, तुम पर
हाय! तुम प्याले को बाहर से साफ़ करते हो,
लेकिन अन्दर से वे डकैती और असंयम से
भरे हैं। 26 अन्धे फ़रीसियो! पहले प्याले और
तश्तरी के भीतरी हिस्से को साफ़ करो, ताकि
उनका बाहरी हिस्सा भी साफ़ हो।

27 कपटी शिक्षको और फ़रीसियो, तुम पर
हाय! तुम चूना फिरी कब्रों की तरह हो जो
बाहर से खूबसूरत दिखती हैं, लेकिन अन्दर
सड़ाहट है। 28 इसी तरह तुम लोग भी बाहर
से लोगों को धर्मी दिखते हो, लेकिन अन्दर
से कपट और बेइन्साफ़ी से भरे हो।

29 कपटी शिक्षको और फ़रीसियो, तुम
नबियों की कब्र बनाते हो और भले लोगों
की कब्रों को सजाते हो। 30 और कहते हो,
कि अगर हम अपने पूर्वजों के दिनों में होते,
तो नबियों की हत्या में उनके साझी न होते।
31 इसी से तो तुम अपनी गवाही आप ही
देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के घातकों
की सन्तान हो। 32 सो तुम अपने बापदादों
के अपराध का घड़ा पूरी तरह भर दो। 33 हे
साँपों, हे करैतों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड
से कैसे बचोगे?

34 इसलिये देखो, मैं तुम्हारे पास
भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और
शास्त्रियों को भेजता हूँ, और तुम उन में
से कितनों को मार डालोगे, और क्रूस पर
चढ़ाओगे, और बहुतों को अपनी सभाओं में
कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर
में खदेड़ते फिरोगे। 35 जिस से धर्मी हाबील
से लेकर बिरिक्याह के पुत्र ज़कर्याह तक,

[a] **23.23** न्याय [b] **23.23** रहम [c] **23.23** ईमान

जिसे तुमने मन्दिर और वेदी के बीच में मार
डाला था, जितने धर्मियों का लोहू पृथ्वी पर
बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर
पड़ेगा। 36 मैं तुम से सच कहता हूँ, ये सब
बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी।
37 हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, तुम जो
भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती हो, और
जो तुम्हारे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह
करती हो, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे
मुर्गी अपने बच्चों को अपने पँखों के नीचे
इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे बच्चों को
इकट्ठे कर लूँ, परन्तु तुमने न चाहा। 38 देखो,
तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता
है। 39 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अब
से जब तक तुम न कहोगे कि "धन्य है वह
जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे
फिर कभी न देखोगे।"

24 जब यीशु प्रार्थना भवन से बाहर
निकल रहे थे, तभी उनके शिष्य
उनके पास आकर उन्हें प्रार्थना भवन[a] की
इमारत दिखाने लगे।
2 यीशु ने उन से कहा, "क्या ये सभी तुम
देखते नहीं हो, मैं तुम से सच कहता हूँ इसका
ऐसा कोई पत्थर नहीं है, जिसे निकाल फेंका
नहीं जाएगा।"
3 जब यीशु जैतून पहाड़ पर बैठे हुए थे,
शिष्य अकेले में उनके पास आए और कहने
लगे, "हमें बताएँ कि ये सब कुछ कब होने
वाला है? आपके आने का और दुनिया के
अन्त का चिन्ह क्या होगा?"
4 यीशु ने उत्तर में कहा, "सावधान रहो कि
तुम्हें कोई धोखा न देने पाए। 5 मेरे नाम से
बहुत लोग आकर यह कह कर भरमाएँगे कि
मैं मसीह हूँ। 6 तुम युद्ध और युद्ध की अफ़वाह
सुनोगे। देखो, तुम परेशान मत हो जाना।
क्योंकि इन सब बातों का होना ज़रूरी है,
लेकिन फिर भी अन्त इतनी जल्दी नहीं होगा।
7 क्योंकि एक देश[b] दूसरे देश[c] के खिलाफ़
और एक राज्य दूसरे राज्य के खिलाफ़ उठ
खड़ा होगा। जगह-जगह आकाल, मरियाँ
और भूकम्प होंगे। 8 ये सब कुछ गर्भवती स्त्री
को होने वाली प्रसव पीड़ा की तरह होंगे।
9 तब वे तुम्हें सताए जाने के लिए अदालत
में सौपेंगे और मार भी डालेंगे। मेरे नाम
की खातिर सारे देश तुम से नफ़रत करेंगे।
10 बहुत से लोग ठोकर खाएँगे और एक दूसरे
को धोखा देंगे और नफ़रत करेंगे। 11 बहुत से
झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और बहुतों
को धोखा देंगे। 12 अनुशासनहीनता[d] के बढ़
जाने से, बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा हो
जायेगा। 13 लेकिन जो आखिरी तक धीरज
रखेगा वही बचेगा।
14 "और राज्य का यह सुसमाचार सारे
संसार में दिया जाएगा ताकि सब राष्ट्रों को
गवाही हो, और तब जगत का अन्त होगा।
15 इसलिए जब तुम उस उजाड़ने वाली
चीज़ को पवित्र जगह में देखो, जिस के बारे में
दानिय्येल नबी ने कहा था[e], 16 तब यहूदिया
के लोग पहाड़ों पर चले जाएँ। 17 जो घर की
छत पर हों वह अपने घर से कुछ लेने के लिए
नीचे न आए। 18 जो खेत में हो वह अपने
कपड़े लेने वापस घर न जाए। 19 उन पर
हाय! जिन के पास उन दिनों में दूध पीते बच्चे
या नवजात शिशु होंगे। 20 यह बिनती करना
कि तुम्हें जाड़े या विश्राम दिन में यह न सहना
पड़े।
21 जैसा दुनिया की शुरूवात से अब तक
नहीं हुआ और न ही कभी होगा ऐसी पीड़ा
का समय आने वाला है। 22 अगर वे दिन कम

[a] **24.1** मन्दिर [b] **24.7** जाति [c] **24.7** जाति [d] **24.12** अधर्म [e] **24.15** पढ़ने वाला सीखे

नहीं किए जाते, तो कोई इन्सान बच नहीं
पाता। लेकिन चुने हुए लोगों के लिए वे दिन
कम किए गए हैं।
23 उस समय अगर कोई तुम से कहे, देखो,
मसीह यहाँ हैं या वहाँ हैं, तो किसी की बात
मत मानना। 24 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे
भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होकर बड़े चमत्कार
और चिन्ह दिखाएँगे, ताकि अगर संभव हो
तो चुने हुओं को बहका दें। 25 मैंने तुम्हें पहले
ही से सचेत किया है। 26 इसलिए अगर वे
तुम से कहें, 'देखो, वह जंगल में हैं, तो मत
जाना,' या देखो! वह अन्दर हैं तो भरोसा मत
रखना।
27 जिस तरह से बिजली पूर्व से निकल कर
पश्चिम तक चमकती है, उसी तरह मनुष्य के
पुत्र का आना होगा। 28 क्योंकि जहाँ लाश है
वहीं गिद्ध इकट्ठा होंगे।
29 उन क्लेश के दिनों के तुरन्त बाद सूरज
अन्धेरा हो जाएगा, चाँद की रोशनी भी
जाती रहेगी, आकाश से तारे नीचे गिर पड़ेंगे
और आकाश की शक्तियाँ हिलायी जाएँगी।
30 तब पुत्र के आने का निशान आकाश में
दिखायी देगा। दुनिया के सभी निवासी दुखी
होवेंगे। वे परमेश्वर के पुत्र को बड़ी शान
के साथ आकाश में बादलों पर आते देखेंगे।
31 वह अपने स्वर्गदूतों को तुरही की बड़ी
आवाज़ के साथ भेजेंगे। वे उनके चुने हुओं
को चारों दिशाओं से, आकाश के एक कोने
से दूसरे कोने तक के लोगों को इकट्ठा करेंगे।
32 अब अंजीर के पेड़ से इस दृष्टान्त का
मतलब सीख लो, "जब इसकी डाली कोमल
हैं और पत्तियाँ निकलती हैं, तुम्हें मालूम होता
है कि गर्मी का मौसम पास है। 33 इसी तरह
जब तुम इन बातों को देखो, तो जान लो कि
वह पास में हैं, बिल्कुल दरवाज़े पर ही।
34 मैं सच-सच कहता हूँ, जब तक ये बातें
पूरी न हो लें, यह पीढ़ी खत्म नहीं होवेगी।
35 आकाश और पृथ्वी का अन्त हो जाएगा,
लेकिन मेरी बातें बिना पूरी हुए नहीं रहेंगी।
36 लेकिन जहाँ तक उस दिन और पल की
बात है, उस विषय में कोई नहीं जानता, न
स्वर्ग के स्वर्गदूत, लेकिन सिर्फ़ मेरे पिता
जानते हैं। 37 लेकिन जैसा नूह के दिनों में था
वैसा ही मनुष्य के पुत्र के आने के समय में
होगा। 38 जब तक कि नूह ने जहाज़ में प्रवेश
नहीं किया और जल प्रलय शुरू नहीं हुआ,
लोग खाने पीने और शादी ब्याह में मगन थे।
39 जब तक जल प्रलय नहीं आया, और लोगों
को बहा नहीं ले गया उन्हें मालूम नहीं था कि
क्या होने वाला है, उसी तरह मनुष्य के पुत्र
का आना होगा।
40 उस समय दो लोग खेत में होंगे। एक
उठा लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया
जायेगा। 41 दो लोग चक्की चलाते होंगे, एक ले
लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
42 इसलिए सतर्क रहो क्योंकि तुम्हें नहीं
मालूम कि प्रभु कब आएँगे।
43 लेकिन यह समझो कि अगर घर के
मालिक को यह मालूम है कि रात में चोर
किस समय आएगा, तो वह जागता रहेगा
और घर में सेंध नहीं लगने देगा। 44 इसलिए
तुम भी तैयार रहना, क्योंकि मनुष्य का पुत्र
ऐसे समय में आ जाएगा जिस समय में तुम
आशा नहीं कर सकते।
45 ईमानदार और समझदार सेवक कौन
होगा, वही न, जिस के मालिक ने उसे घर का
प्रबन्धक बनाया, ताकि उन्हें सही समय पर
खाना दे? 46 वही सेवक आशीषित है जिस
का मालिक उसे वैसा ही करते पाएगा। 47 मैं
तुम से निश्चिय के साथ कहता हूँ, कि वह

उसे अपने सारे कारोबार और धन-संपत्ति पर
अधिकारी ठहराएगा।
48 लेकिन अगर वह बुरा नौकर अपने मन
में कहे कि, मेरे मालिक के आने में देर है,
49 और अपने संगी साथियों की पिटाई करने
एवं शराबियों के साथ पीने लगे, 50 तब तो
उस नौकर का मालिक एक ऐसे दिन और
समय में आ जाएगा, जब कि वह उसके आने
की आशा भी न करता होगा। 51 तब वह उसे
कड़ी सज़ा देगा, जहाँ रोना और दाँतों का
पीसना होगा। उसका भाग कपटियों के साथ
होगा।"

25 "स्वर्ग का राज्य उन दस कुँवारियों
की तरह होगा, जो अपने दीयों को
लेकर दूल्हे से मिलने गयीं। 2 उन में से पाँच
समझदार और पाँच बेवकूफ़ थीं। 3 बेवकूफ़ों
ने दीयों के साथ तेल नहीं लिया। 4 लेकिन
समझदारों ने अपने बर्तनों में तेल भी लिया।
5 जब दूल्हे के आने में देर हुयी तो वे
ऊँघते-ऊँघते सो भी गयीं।
6 बीच रात में बड़ा हल्ला-गुल्ला हुआः 'देखो
दूल्हा आ रहा है। उससे मिलने जल्दी चलो।'
7 तभी सभी कुँवारियाँ उठ कर अपने-अपने
दीयों की बत्तियाँ ठीक करने लगीं।
8 बेवकूफ़ों ने समझदारों से कहा, 'अपने
तेल में से हमें भी कुछ दे दो क्योंकि हमारे
दिये बुझ रहे हैं।'
9 लेकिन समझदारों ने जवाब में कहा,
'नहीं, हम नहीं देंगे, नहीं तो हम सब को
यह काफ़ी नहीं होगा। अच्छा यह है कि
तुम बाज़ार जाकर तेल बेचने वालों से खरीद
लो'।
10 जब वे तेल खरीदने जा रही थीं, दूल्हा
आ गया। जो तैयार थीं, वे दूल्हे के साथ शादी
में चली गयीं। दरवाज़ा बन्द कर दिया गया।
11 इसके बाद दूसरी कुँवारियाँ भी यह कहते
हुए आयीं, 'प्रभु दरवाज़ा खोलिए।'
12 लेकिन उसने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच
कहता हूँ, कि मैं तुम्हें नहीं जानता।
13 इसलिए सावधान रहना, क्योंकि तुम
वह समय नहीं जानते जब मनुष्य का पुत्र
आएगा।
14 क्योंकि स्वर्ग का राज्य एक ऐसे इन्सान
की तरह है जिस ने दूर देश का सफ़र शुरू
करने से पहले अपने नौकरों को बुलाकर
अपनी चीज़ों की ज़िम्मेदारी सौंप दी। 15 उन
में से हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार
पहले को पाँच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे
को एक दिया। तुरन्त उसके बाद वह यात्रा
पर निकल पड़ा।
16 तब जिस को पाँच तोड़े मिले थे, उसने
इस्तेमाल करके पाँच और कमा लिए।
17 इसी तरह जिसे दो मिले थे, उसने दो और
कमाए। 18 लेकिन जिसे एक मिला था, उसने
जाकर मालिक के पैसे को ज़मीन में गाड़
दिया।
19 काफ़ी समय के बाद वापस लौटने पर
उस मालिक ने हिसाब माँगा। 20 जिस को
पाँच तोड़े मिले थे, उसने पाँच और लाकर
मालिक से कहा, 'मालिक देखिए, मैंने पाँच
और कमा लिए हैं। 21 उसके मालिक ने
कहा, 'बहुत बढ़िया, अच्छे और ईमानदार
सेवक, तुम कुछ ही चीज़ों में ईमानदार
रहे हो; मैं तुम्हें बहुत सी चीज़ों के ऊपर
अधिकारी ठहराऊँगा। अपने मालिक की
खुशी में शामिल हो जाओ।'
22 जिसे दो तोड़े मिले थे उसने भी आकर
कहा, 'मालिक, आपने मुझे दो तोड़े दिए थे।
देखिए, मैंने दो और तोड़े कमाए हैं।'
23 उसके मालिक ने उससे कहा, 'बहुत
बढ़िया अच्छे और ईमानदार सेवक! तुम

थोड़े में ईमानदार रहे हो, मैं तुम्हें बहुत सी
चीज़ों के ऊपर अधिकारी बनाऊँगा। अपने
मालिक की खुशी में शामिल हो जाओ।'
24 तब जिस नौकर को एक तोड़ा मिला
था उसने आकर कहा, 'मालिक, मैं आपको
जानता हूँ कि आप सख्त मन के हैं। आप
वहीं फ़सल काटना चाहते है, जहाँ बोते
नहीं हैं। आपने जहाँ छिथराया भी नहीं, वहीं
बटोरना चाहते हैं। 25 डर की वजह से मैंने उस
तोड़े को जिसे आपने मुझे दिया था, जाकर
ज़मीन में गाड़ दिया। देखिए, यह रहा आपका
तोड़ा।'
26 उसके मालिक ने जवाब में कहा, 'तुम
दुष्ट और आलसी नौकर। तुम जानते थे कि
जहाँ मैं बोता नहीं हूँ, वहीं काटना चाहता हूँ।
वहीं इकट्ठा करना चाहता हूँ जहाँ छिथराता
नहीं हूँ। 27 इसलिए तुम को चाहिए था कि
बैंक में जमा करते, तो वापस आने पर मैं
ब्याज के साथ उसे ले लेता।
28 इसलिए उससे तोड़ा लेकर, उसे दे दो,
जिस के पास दस तोड़े हैं। 29 क्योंकि जिस
के पास है, उसे दिया जाएगा और उसके
पास बहुत हो जाएगा। लेकिन जिस के पास
नहीं है, उसके पास जो कुछ है वह भी ले
लिया जाएगा। 30 इस निकम्मे सेवक को घोर
अन्धेरे में फेंक दो। वहाँ रोना और दाँतों
का पीसना होगा'। 31 जब परमेश्वर का पुत्र
अपनी शान[a] में अपने स्वर्गदूतों के साथ
आएगा, तब वह अपनी महिमा के राजासन
पर बैठेगा। 32 सभी देश उसकी मौजूदगी में
इकट्ठे होंगे। जिस तरह से चरवाहा भेड़ों को
बकरियों से अलग करता है, उसी तरह से वह
उन्हें अलग करेगा। 33 वह भेड़ों को अपनी
दाहिने और बकरियों को बाईं ओर रखेगा।
34 तब राजा अपने दाहिने हाथ के लोगों
से कहेगा, 'मेरे पिता के आशीषित लोगो,
आओ। जिस राज्य को दुनिया की शुरूआत
से तैयार किया गया है, उसमें दाखिल हो।
35 क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने
को दिया। मैं प्यासा था और तुमने मेरी
प्यास बुझायी। मैं अनजान था तुमने मेरा
स्वागत किया। 36 मैं नंगा था, तुमने मुझे
कपड़े पहनाए। मैं बीमार था, तुम मुझ से
मिलने आए। मैं जेल में था और तुमने मुझे
भेंट दी।'
37 तब माफ़ी पा चुके लोग यह कहते हुए
जवाब देंगे, 'प्रभु, हम ने आपको कब भूखा
देख कर खाना खिलाया था? प्यासा देख कर
पानी पिलाया था? 38 हम ने कब आपको
अनजान देख कर घर के भीतर बुलाया या
नंगा देख कर कपड़े पहनाए? 39 या कब हम
ने आपके बीमार होने या जेल में बन्द होने
पर मुलाकात की?'
40 तब राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से
यकीनन कहता हूँ, कि तुमने जो मेरे इन छोटे
से छोटे भाईयों में से किसी एक के साथ
किया, वह मेरे ही साथ किया।'
41 तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे
स्त्रापित लोगो, मेरे साम्हने से उस अनन्त
आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके
दूतों के लिए तैयार की गई है। 42 क्योंकि
मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को नहीं
दिया। मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी
नहीं पिलाया। 43 मैं विदेशी था, और तुमने
मुझे अपने घर में नहीं ठहराया। मैं नंगा था,
और तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाए, बीमार
और जेल में था, और तुमने मेरे ऊपर ध्यान
न दिया।'

[a] **25.31** महिमा

44 तब वे उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हम ने
आपको कब भूखा, प्यासा या परदेशी या
नंगा या बीमार या जेल में देखा, और आपकी
सेवा टहल न की?
45 तब वह उन्हें उत्तर देंगे, 'मैं तुम से सच
कहता हूँ कि तुमने जो उन छोटे से छोटों में
से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे
साथ भी नहीं किया।'
46 ऐसे लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु
धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"

26 जब यीशु ये सभी बातें कह चुके,
तो उन्होंने शिष्यों से कहा, 2 "तुम्हें
मालूम हो कि फ़सह के त्यौहार के दो दिन
बाद मनुष्य का पुत्र क्रूस पर मारा जाएगा।
3 तब प्रधान पुरोहित[a], शिक्षक और बुज़ुर्ग,
कैफ़ा, महापुरोहित[b] के महल में इकट्ठे हुए।
4 चालाकी से यीशु को पकड़ कर मारने की
साजिश उन्होंने वहीं बनायी। 5 लेकिन उन्होंने
कहा, "त्यौहार के दिन नहीं ताकि ऐसा न हो
कि लोगों में बवाल हो जाए।"
6 जब यीशु शिमोन कुष्ट रोगी के घर में,
बेतनिय्याह में थे, 7 एक स्त्री एक अलबास्टर
के बर्तन में कीमती इत्र ले आयी। उसने कुर्सी
पर बैठे हुए यीशु के सिर पर उस खुशबूदार
इत्र को उण्डेल दिया। 8 शिष्य यह देख कर
कुड़कुड़ा कर कहने लगे, "इसे बर्बाद क्यों
कर दिया गया? 9 इसी इत्र को काफ़ी पैसों
में बेच कर गरीबों की मदद की जा सकती
थी।"
10 यह जान कर यीशु ने उन से कहा, "इस
महिला को क्यों सता रहे हो? उसने मेरे लिए
यह किया है। 11 गरीब लोग तो तुम्हारे साथ
हमेशा रहेंगे, लेकिन मैं तुम्हारे साथ हमेशा
नहीं रहूँगा। 12 उसने मेरी देह पर जो इत्र
उण्डेला है, वह मेरे दफ़नाए जाने के लिए है।
13 मैं यह सच्चाई बताए देता हूँ कि दुनिया में
जहाँ कहीं सुसमाचार दिया जाएगा, वहाँ जो
कुछ इस महिला ने किया है, उसे भी मेरी याद
में बताया जाएगा।"
14 तब यहूदा इस्करियोती, जो उन बारहों
में से एक था, प्रधान पुरोहित के पास जाकर
कहने लगा, 15 "मैं खुद यीशु को तुम्हारे हाथों
में सुपुर्द कर दूँगा, तुम मुझे क्या दोगे?"
उन्होंने उसे चाँदी के तीस सिक्के देना मंज़ूर
कर लिया। 16 उसी समय से वह यीशु को
पकड़वाने का मौका ढूँढने लगा।
17 अखमीरी रोटी के त्यौहार के पहले दिन
शिष्य यीशु के पास आकर कहने लगे, "आप
कहाँ चाहते हैं कि हम फ़सह खाने की तैयारी
करें?"
18 यीशु ने कहा, "शहर में जाकर फ़लां
व्यक्ति से कहना, गुरू ने कहा है, कि मेरा
समय नज़दीक है। अपने शिष्यों के साथ मैं
तुम्हारे घर पर फ़सह का त्यौहार मनाऊँगा।"
19 शिष्यों ने यीशु के कहने के अनुसार
किया और फ़सह तैयार किया।
20 शाम के समय यीशु अपने बारह शिष्यों
के साथ बैठ गए। 21 जब वे सब खा ही रहे थे
तभी यीशु ने कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता
हूँ कि तुम में से एक मुझे धोखा देगा।"
22 सभी शिष्य बहुत दुःखी हुए और हर एक
जन पूछने लगा, "प्रभु, क्या वह मैं हूँ?"
23 तब यीशु ने जवाब दिया, "जो कटोरे में
अपना हाथ मेरे हाथ के साथ ही डाल रहा
है, वह मुझे पकड़वाएगा। 24 जैसा लिखा है
वैसा मनुष्य के पुत्र के साथ होगा, लेकिन
अफ़सोस उस पर, जिस के द्वारा मनुष्य का
पुत्र पकड़वाया जाएगा। अच्छा होता कि वह
इन्सान पैदा ही न हुआ होता।"

[a] **26.3** याजक [b] **26.3** महायाजक

25 तब यहूदा जिस ने यीशु को धोखा दिया
था, पूछा, “स्वामी, क्या वह मैं हूँ?”
26 यीशु ने कहा, “तुमने खुद ही कबूल
लिया है।” यीशु ने धन्यवाद देकर रोटी के
टुकड़े करके शिष्यों को देते समय कहा, “लो
खाओ। यह मेरी देह को दिखाती है।”
27 फिर यीशु ने प्याले के लिए धन्यवाद देते
हुए कहा, “तुम सभी इस में से पीओ। 28 नयी
वाचा उस खून की तरफ़ इशारा है जो बहुत
से लोगों के गुनाहों की माफ़ी के लिए बहाया
जाने वाला है। 29 लेकिन मैं तुम्हें यह बताना
चाहता हूँ कि अंगूर के रस को मैं उस दिन
तक नहीं पीऊँगा, जब तक मैं अपने पिता के
राज्य में तुम्हारे साथ फिर से न पीऊँ।”
30 भजन गाने के बाद वे सब जैतून पहाड़
पर चले गए।
31 तब यीशु ने उन से कहा, “मेरी वजह
से आज रात तुम सभी लड़खड़ा जाओगे।
क्योंकि लिखा है, मैं चरवाहे पर वार करूँगा
और झुण्ड की भेड़ें तित्तर-बितर हो जाएँगी।
32 लेकिन जी उठने के बाद तुम से पहले मैं
गलील जाऊँगा।”
33 पतरस ने जवाब में कहा, “आपकी
वजह से चाहे सब लड़खड़ाएँ, मैं मज़बूत बना
रहूँगा।”
34 यीशु ने उस से कहा, “मैं यह सच्चाई
बताता हूँ, कि इसी रात इसके पहले कि
मुर्गा बाँग दे, तुम तीन बार मेरा इन्कार कर
चुकोगे।”
35 पतरस ने जवाब दिया, “मुझे चाहे मरना
भी पड़े, तब भी मैं आपका इन्कार नहीं
करूँगा।” सभी शिष्यों ने इसी बात की हामी
भरी।
36 तब यीशु उनके साथ गतसमनी नामक
जगह पर आए और शिष्यों से कहा, “तुम
लोग यहीं ठहरो।”
37 अपने साथ यीशु पतरस और ज़बदी के
दो बेटों को ले गए। वहीं पर उनका मन भारी
और दुखी हो गया। 38 तब यीशु ने उन सभी
से कहा, “मेरा मन बहुत दुखी है और ऐसा
लग रहा है, मानो मेरा प्राण निकला जा रहा
है। यहीं इन्तज़ार करो और जागते रहो।”
39 जैसे ही वह थोड़ा आगे गए, मुँह के बल
गिर कर पिता से कहने लगे, “मेरे पिता जी,
अगर यह हो सकता है, तो यह दुख का
प्याला मुझे न पीना पड़े। फिर भी मेरी नहीं
लेकिन आपकी मर्ज़ी पूरी हो।”
40 यीशु ने आकर शिष्यों को सोता देख कर
पतरस से कहा, “यह क्या, तुम मेरे साथ एक
घन्टे भी जाग न सके? 41 जागते हुए पिता से
बिनती करो ताकि तुम परीक्षा में असफ़ल
न हो जाओ। आत्मा सरगर्म है लेकिन देह
कमज़ोर है।”
42 दूसरी बार यीशु आगे बढ़ गए और कहने
लगे, “मेरे पिता जी, अगर यह प्याला मुझे
पीना है तो आपकी मर्ज़ी पूरी हो।”
43 दोबारा लौटने पर यीशु ने फिर से उन्हें
सोते पाया और उनकी आँखें नींद से भरी थीं।
44 उन्हें छोड़कर यीशु फिर आगे बढ़ गए और
वही बात कह कर तीसरी बार प्रार्थना करने
लगे।
45 वापस आने पर उन्होंने अपने शिष्यों से
कहा, “क्या तुम अभी तक सो रहे हो और
आराम कर रहे हो? देखो, समय आ पहुँचा है
कि मनुष्य के पुत्र को धोखा दिया जाए और
अपराधियों के सुपुर्द किया जाए। 46 उठो,
चलो। देखो, मेरा पकड़वाने वाला नज़दीक
आ गया है।”
47 यीशु यह कह ही रहे थे कि अचानक
बारह में से यहूदा वहाँ आ पहुँचा। उसके
साथ लोगों की एक बड़ी भीड़ थी। उनके
हाथों में तलवारें और लाठियाँ थीं। ये लोग

प्रधान पुरोहितों और बुज़ुर्गों की तरफ़ से भेजे
गए थे। 48 धोखा देने वाले ने पहले ही से
यह बता दिया था कि जिस को मैं चूमूँ उसे
तुम पकड़ लेना। 49 तुरन्त वह यीशु के पास
पहुँचा और चुम्बन लेते हुए कहा, “गुरु जी,
प्रणाम।”
50 यीशु ने कहा, “दोस्त, तुम यहाँ क्यों
आए हो?” तब वहाँ पहुँचकर उन्होंने यीशु
के ऊपर हाथ डाल कर उन्हें पकड़ लिया।
51 अचानक यीशु के साथ के लोगों में से
एक ने अपना हाथ बढ़ाकर तलवार चला दी,
जिस से प्रधान पुरोहित के नौकर का कान
कट गया।
52 तब यीशु ने उस से कहा, “अपनी
तलवार म्यान में रख लो। जो लोग तलवार
से मारते हैं उन्हें भी तलवार से मारा जाएगा।
53 तुम क्या सोचते हो कि अगर मैं अपने पिता
से कहूँ, क्या वह बारह पलटन से ज़्यादा
स्वर्गदूतों को मेरे लिए भेज नहीं सकते?
54 लेकिन यदि ऐसा हुआ तो, जैसा पवित्र
वचन में लिखा है, वह कैसे पूरा होगा?”
55 तभी यीशु ने भीड़ से कहा, “क्या जिस
तरह से चोर को पकड़ा जाता है उसी तरह से
तुम तलवारें, भाले लेकर मुझे पकड़ने आए
हो? प्रार्थना भवन में अक्सर मैं तुम लोगों
को सिखाया करता था, तब तुमने मुझे नहीं
पकड़ा। 56 लेकिन यह सब इसलिए हो रहा है
ताकि बाइबल में लिखी बातें पूरी हों।” तब
सभी शिष्य यीशु को छोड़ भाग खड़े हुए।
57 जिन लोगों ने यीशु को पकड़ लिया, वे
उन्हें प्रधान पुरोहित कैफ़ा के पास ले गए,
जहाँ शिक्षक और बुज़ुर्ग अगुवे इकट्ठे थे।
58 लेकिन एक दूरी पर प्रधान महापुरोहित के
अहाते में जाकर पतरस नौकरों के साथ बैठ
गया, ताकि देखे कि फिर क्या होगा।
59 प्रधान पुरोहित, बुज़ुर्ग और सारी सभा
उन्हें मार डालने के लिए झूठी गवाही की
तलाश में थे। 60 हालाँकि बहुत से झूठे गवाह
सामने आए लेकिन कुछ सच्चाई सामने नहीं
आयी। 61 आखिर में दो व्यक्तियों ने आगे
आकर कहा, “इसने कहा था कि मैं परमेश्वर
के घर को तीन दिन में धराशायी कर सकता
हूँ और तीन दिन में फिर बना भी सकता हूँ।”
62 तब प्रधान पुरोहित ने खड़े होकर यीशु
से कहा, “क्या आप कोई जवाब नहीं देते?
ये लोग तो आपके खिलाफ़ क्या कुछ नहीं
कह रहे हैं?” लेकिन यीशु खामोश रहे।
63 तब प्रधान पुरोहित ने यीशु से कहा, “मैं
जीवित परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि अगर
आप परमेश्वर के बेटे हैं, तो हमें बताईए।”
64 यीशु ने उससे कहा, “तुमने कह ही
दिया है। इसके अलावा, मैं तुम्हें बताता हूँ
कि इसके बाद तुम परमेश्वर के पुत्र को
अधिकार के पद पर आसीन और आकाश
के बादलों पर आते देखोगे।”
65 इसके बाद प्रधान पुरोहित ने अपने
कपड़े फाड़ते हुए कहा, “यह निन्दा कर रहा
है। अब हमें और गवाहों की क्या ज़रूरत?
66 अब तो तुम लोगों ने स्वयं ही इसके मुँह से
सुन लिया है। तुम क्या सोचते हो?” उन्होंने
जवाब में कहा, “वह मौत की सज़ा के
लायक है।”
67 तब उन्होंने यीशु के मुँह पर थूका और
घूँसों से मारा। दूसरों ने थप्पड़ मारा 68 और
कहा, “मसीह जी, बताईए किस ने मारा
आपको?”
69 इसी दौरान पतरस बाहर आँगन में बैठा
हुआ था, तभी एक नौकरानी लड़की आकर
कहने लगी, “तुम भी तो गलील के यीशु के
साथ थे।”

70 लेकिन उसने सब के सामने इन्कार
करते हुए कहा, “यह सब तुम क्या कह रही
हो? मैं यह सब नहीं जानता।”
71 तब पतरस वहाँ से निकल कर बाहर
आया, तो दूसरी जवान नौकरानी ने उसे देख
कर वहाँ खड़े लोगों से कहा, “यह आदमी
भी नासरी यीशु के साथ था।”
72 लेकिन फिर से उसने शपथ खाते हुए
इन्कार किया कि वह यीशु को जानता भी
नहीं हैं।
73 कुछ समय के बाद उन्होंने जो वहीं
पास में खड़े हुए थे, आकर पतरस से कहा,
“तुम्हारी बातचीत से मालूम पड़ता है कि तुम
भी उन्हीं में से एक हो।”
74 तब वह कसम खा कर शाप देते हुए
कहने लगा, “मैं उस इन्सान को जानता
तक नहीं हूँ।” उसी समय मुर्गे ने बाँग दी।
75 पतरस को यीशु की वह बात याद आयी,
कि उन्होंने यह कहा था, कि मुर्गे के बाँग
देने से पहले वह तीन बार उनका इन्कार कर
चुका होगा। तभी वह बाहर जाकर फूट-फूट
कर रोने लगा।

27 सुबह होते ही सभी प्रधान पुरोहितों
और बुज़ुर्ग नेताओं ने यीशु को मार
डालने के बारे में सलाह मशविरा किया।
2 उनको बाँधने के बाद वे पुन्तियुस पिलातुस
को सुपुर्द करने के लिए बाहर ले गए।
3 तब यहूदा जिस ने यीशु को पकड़वाया
था, यीशु को पकड़वाए जाता देख अपने
आप को कोसने लगा। प्रधान महायाजकों
और बुजुर्ग नेताओं के पास तीस चाँदी के
सिक्के वापस लाकर देते हुए 4 उसने कहा,
“एक निरपराध को धोखा देकर मैंने अपराध
किया है।” उन लोगों ने जवाब दिया, “हमें
इस से कुछ लेना देना नहीं, तुम्हीं देखते
बैठो।”
5 उसने प्रार्थना भवन में उन सिक्कों को फेंक
दिया और जाकर फाँसी लगा ली।
6 प्रधान पुरोहितों ने उन सिक्कों को उठा कर
कहा, “उन्हें खज़ाने में रखना जायज़ नहीं,
क्योंकि यह खून का दाम है।”
7 उन्होंने सलाह मशविरा करके कुम्हार
का खेत खरीदा ताकि विदेशियों को वहीं
दफ़नाया जा सके। 8 इसलिए उस खेत का
नाम आज तक “खून का खेत” है। 9 तब
यिर्मयाह नबी की कही हुयी बात पूरी हुयी।
और उन्होंने तीस चाँदी के सिक्के लिए, जो कि
एक व्यक्ति का मूल्य आँका गया था। यह
मूल्य भी इस्राएलियों ने लगाया था।
10 और जैसा परमेश्वर ने हुक्म किया, इस
पैसे से कुम्हार का खेत खरीदा गया।
11 यीशु गवर्नर के सामने खड़े किए गए और
गवर्नर ने उन से पूछा, “क्या तुम यहूदियों के
राजा हो?” यीशु ने जवाब में कहा, “तुम खुद
ऐसा कह रहे हो।”
12 प्रधान पुरोहितों और बुज़ुर्ग नेताओं के
आरोप लगाने पर भी यीशु ने कोई जवाब
नहीं दिया। 13 तब पिलातुस ने उन से कहा,
“क्या तुम सुन रहे हो, कि वे तुम्हारे खिलाफ़
गवाही दे रहे हैं?”
14 यीशु ने उन से एक शब्द भी नहीं कहा,
जिस से गवर्नर को बड़ी हैरानी हुयी।
15 उस त्यौहार के दिन हर साल गवर्नर
लोगों की पसन्द के अनुसार एक कैदी छोड़
दिया करता था। 16 उस समय बरअब्बा
नाम का एक बहुत खतरनाक कैदी था।
17 इसलिए जब वे इकट्ठे थे, पिलातुस ने उन
से कहा, “तुम्हारे लिए मैं किस को छोड़ दूँ,
बरअब्बा को या मसीह कहलाने वाले यीशु

को?” 18 उसे मालूम था कि यीशु को ईर्ष्या
की वजह से उसके हाथ सुपुर्द किया गया
था।
19 जब वह न्याय आसन पर बैठा था,
उसकी पत्नी ने यह संदेश भेजा, “इस बेगुनाह
आदमी के साथ कुछ भला बुरा न करना। मैंने
आज रात स्वप्न में देखा है कि इसकी वजह
से मैंने बहुत पीड़ा सही।”
20 लेकिन प्रधान पुरोहित और बुज़ुर्ग
अगुवों ने भीड़ को उकसाया कि वे बरअब्बा
को बचा लें और यीशु को मरवा डालें।
21 गवर्नर ने पूछा, “तुम इन दोनों में से किस
को आज़ाद देखना चाहते हो?” उन्होंने कहा,
“बरअब्बा को!”
22 पिलातुस ने उन से कहा, “तब मसीह
कहलाने वाले यीशु के साथ मैं क्या करूँ?”
उन सभी ने ऊँची आवाज़ से कहा, “उसे क्रूस
पर चढ़ाया जाए।”
23 गवर्नर ने कहा, “क्यों? उसने क्या बुराई
की है?” वे और ऊँची आवाज से चिल्लाए,
“उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए।”
24 जब पिलातुस ने देखा कि मामला
सुलझने के बजाए बिगड़ता जा रहा है, उसने
भीड़ के सामने अपने हाथों को यह कहते हुए
धोया, “मैं इस निरपराध इन्सान के खून से
मुक्त हूँ। अब तुम्हीं देखते बैठो।”
25 तब सभी लोगों ने जवाब दिया, “इसके
खून की सज़ा हमें और हमारी पीढ़ियों को
मिले”।
26 तब पिलातुस ने उनके लिए बरअब्बा
को आज़ाद कर दिया। और यीशु की पिटाई
कराने के बाद उन्हें क्रूस की सज़ा दिए जाने
के लिए सौंप दिया। 27 तब गवर्नर के सिपाही
यीशु को गवर्नर के महल में ले गए और उनके
चारों तरफ़ सिपाहियों का मजमा लग गया।
28 उनके कपड़ों को उतार कर उन्हें बैजनी
चोगा पहनाया गया। 29 काँटों का ताज बना
कर उन्होंने यीशु के सिर पर रखा और हाथ
में एक सरकण्डा दे दिया। उनके सामने गिर
कर उनकी हँसी उड़ाते हुए, वे कहने लगे,
“यहूदियों के राजा प्रणाम।” 30 उन्होंने यीशु
के मुँह पर थूका और सरकण्डे से सिर पर
मारा। 31 हँसी उड़ाने के बाद उन्होंने उनके
बैजनी चोगे को उतार कर, उन्हीं के कपड़े
पहना कर क्रूस पर चढ़ाने चल दिए।
32 बाहर आने के बाद उन्होंने शिमोन कुरेनी
को पकड़ा और ज़बरदस्ती उसके ऊपर क्रूस
लाद दिया। 33 जब वे खोपड़ी कहलाने वाले
स्थान गुलगुता तक पहुँचे, 34 उन्होंने यीशु को
पीने के लिए सिरका और पित्त मिला हुआ
दाखरस दिया। उसको चखते ही यीशु ने पीने
से इन्कार कर दिया।
35 उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाकर चिट्ठी
उठायी और उनके कपड़े आपस में बाँट
लिए। तभी नबी के कहे हुए शब्द पूरे हुए कि
उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और
मेरे कपड़ों पर चिट्ठी उठायी।
36 वहीं बैठे-बैठे वे यीशु को ताकते भी रहे।
37 यीशु के सिर के ऊपर उन्होंने यह आरोप
लिख दियाः यह यहूदियों के राजा यीशु हैं।
38 उसी समय यीशु के साथ दो चोरों को
भी लटकाया गया, एक को दाहिनी तरफ़
और दूसरे को बायीं तरफ़। 39 जो लोग वहाँ
से गुज़रते थे, वे सभी अपने-अपने सिरों को
हिला-हिला कर कहते थे, 40 “तुम जो प्रार्थना
भवन को बर्बाद करके तीन दिन में बनाने
वाले थे, अपने आप को बचाओ। अगर तुम
परमेश्वर के पुत्र हो तो क्रूस से नीचे उतर
आओ।”
41 इसी तरह से प्रधान पुरोहितों ने शिक्षकों
और बुज़ुर्गों के साथ मिल कर हँसी उड़ाते
हुए कहा, “उसने दूसरों को बचाया, लेकिन

अपने आपको न बचा सका। 42 अगर वह
इस्राएल का राजा है तो क्रूस से नीचे उतर
आए, हम भी विश्वास कर लेंगे।
43 उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, अगर
वह चाहे तो आकर उसे बचाए क्योंकि उसी
ने तो दावा किया था कि वह परमेश्वर का
पुत्र है।"
44 इसी तरह से उन दोनों चोरों ने भी जिन्हें
दोनों तरफ़ लटकाया गया था, यीशु की हँसी
उड़ाई।
45 उसके बाद दोपहर से तीसरे पहर तक
सारे देश में घोर अन्धेरा छाया रहा।
46 करीब तीन बजे यीशु मसीह ऊँची
आवाज़ में चिल्ला उठे, "एली, एली, लमा
शबक्तनी?" इसका मतलब है, "मेरे
परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, आपने मुझे क्यों
छोड़ दिया?"
47 वहाँ पर खड़े कुछ लोगों ने यह सुन
कर कहा, "यह आदमी एलिय्याह को बुला
रहा है।" 48 तुरन्त उन में से एक ने दौड़ कर
दाखमधु और सिरके में डुबोए स्पंज को एक
सरकण्डे पर रख कर यीशु को पीने के लिए
दिया। 49 बाकी लोगों ने कहा, "उसे चिल्लाने
दो। अभी देखते हैं कि एलिय्याह उसे बचाने
आता है या नहीं।"
50 यीशु ने ऊँची आवाज में चिल्लाने के बाद
अपनी आत्मा त्याग दी।
51 उसी समय तुरन्त प्रार्थना भवन का पर्दा
ऊपर से नीचे दो हिस्सों में बँट गया। पृथ्वी
डोल गयी। चट्टानें फट गयीं। 52 कब्रें खुल
गयीं और बहुत से संतों की देह जो सो चुके
थे, फिर से जी उठीं। 53 वे जी उठने के बाद
यरूशलेम गए, जहाँ बहुत से लोगों ने उन्हें
देखा।
54 सूबेदार और उसके साथ जो लोग
चौकीदारी कर रहे थे, भूकम्प और दूसरी
घटनाओं को देख कर डर कर कहने लगे,
"यह तो सचमुच में परमेश्वर के पुत्र थे।"
55 वहाँ बहुत सी महिलाएँ जो यीशु की
सेवा करती थीं और साथ-साथ चली आयीं
थी, दूर से ताक रहीं थीं। 56 उन्हीं में से
मरियम मगदलीनी, याकूब और योसेस की
माँ मरियम और ज़ब्दी के बच्चों की माँ थीं।
57 शाम होते-होते अरिमतियाह का यूसुफ़
नाम का अमीर आदमी जो यीशु को मानने
लगा था, आया। 58 पिलातुस के पास जाकर
उसने यीशु की देह मांगी। तब पिलातुस ने
हुक्म दिया कि उसे यीशु की लाश दे दी
जाए। 59 उस लाश को यूसुफ़ ने साफ़ मलमल
के कपड़े में लपेट कर, 60 अपनी उस नयी
कब्र में रखा जिसे उसने चट्टान में खुदवाया
था। उस कब्र के मुँह पर एक बड़े पत्थर को
रखवाकर वह वहाँ से चला गया। 61 मरियम
मगदलीनी और दूसरी मरियम वहाँ कब्र के
सामने ही बैठी हुयी थीं।
62 अगले दिन जो कि तैयारी के दिन के बाद
का था, प्रधान पुरोहित और फ़रीसी पिलातुस
के पास आकर कहने लगे, 63 "महाशय, जीते
जी उस धोखेबाज़ ने कहा था, तीन दिन बाद
वह जी उठेगा। 64 इसलिए यह आज्ञा दें कि
तीन दिन तक कब्र की रक्षा की जाए, नहीं
तो कहीं उसके शिष्य उसकी लाश को चुरा
न ले जाएँ, और लोगों में यह बात फैला दें कि
यीशु मरे हुओं में से जी उठे हैं। यह तो पहली
गलती से ज़्यादा बड़ी गलती होगी।"
65 पिलातुस ने उन से कहा, "तुम्हारे पास
पहरेदार हैं। जितना हो सकता है उतना ज़्यादा
पहरा बढ़ा दो।"

66 इसलिए उन्होंने जाकर पत्थर पर मोहर
करके और संतरी को बैठा कर पहरा और
ज़्यादा कड़ा कर दिया।

28 विश्राम दिन के बाद, सप्ताह के
पहले दिन पौ फटते ही मरियम
मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र पर
आयीं। 2 अचानक एक ज़ोरदार भूकम्प
आया, क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गदूत स्वर्ग
से उतर आया। कब्र के दरवाज़े पर से पत्थर
हटा कर वह उसी पर बैठ गया। 3 दिखने में
वह रोशनी की तरह था और उसके कपड़े
बर्फ़ की तरह सफ़ेद थे। 4 डर की वजह से
पहरेदार काँपने लगे और मरे हुए इन्सान की
तरह हो गए।

5 स्वर्गदूत ने महिलाओं से कहा, “डरो मत,
क्योंकि मुझे मालूम है कि जिस यीशु को क्रूस
पर चढ़ाया गया था, उन्हीं को तुम ढूँढ रही
हो। 6 वह यहाँ नहीं हैं क्योंकि जी उठे हैं।”
उसने कहा, “आओ और वह जगह देखो
जहाँ उनकी लाश रखी थी। 7 जल्दी जाकर
उनके शिष्यों को बताओ कि वह मरे हुओं
में से जी उठे हैं। वह तुम से पहले गलील
पहुँचेंगे। तुम वहीं पर उन से मिल पाओगे।”
8 डर और आनन्द से भरे वे कब्र से दौड़ीं
ताकि शिष्यों को जाकर खबर दें। 9 जैसे ही
वे ये खबर शिष्यों को देने वाली थीं, रास्ते
में यीशु की मुलाकात उन से हो गयी। उनके
पास आकर उन लोगों ने यीशु के पैर छू लिए
और दण्डवत् किया।

10 तब यीशु ने उन से कहा, “डरो मत।
जाकर मेरे भाईयों से कहो कि वे गलील को
जाएँ, वहीं पर वे मुझे मिलेंगे।

11 जब ये महिलाएँ जा रही थीं, कुछ
पहरेदार वहाँ दिखायी दिए। उन्होंने प्रधान
पुरोहितों को सब कुछ बता दिया। 12 जब
उनकी मुलाकात कुछ और परिचित लोगों के
साथ हुयी, 13 तो उन्होंने सिपाहियों को बड़ी
रकम देते हुए किसी के पूछने पर यह कहने
के लिए कहा, “कि रात को जब हम सो रहे
थे, तब उनके चेलों ने आकर उनके शव को
चुरा लिया। 14 अगर यह बात गवर्नर के कान
तक पहुँचती है, तो हम उसे समझा देंगे और
तुम्हें बचा भी लेंगे।”

15 उन्होंने पैसे लेकर वही किया, जैसा उन
से कहा गया था। यह बात आज तक यहूदियों
में प्रचलित है।

16 तब ग्यारह शिष्य गलील के उस पहाड़
पर चले गए, जिस के विषय में यीशु कह रहे
थे। 17 जब शिष्यों ने यीशु को दर्शन में देखा,
और प्रणाम किया, परन्तु कुछ लोग सन्देह
भी करने लगे। 18 यीशु ने आकर उन से कहा,
“स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे
दिया गया है, 19 इसलिए जाकर सभी देशों के
लोगों को शिष्य बनाओ। उन्हें पिता पुत्र और
पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। 20 जो
आज्ञाएँ मैंने दी हैं, उन्हें मानना सिखाओ।
देखो, जब तक कि दुनिया का अन्त न हो,
मैं तुम्हारे साथ हूँ।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com